Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24
website- www.dvpnews.in
रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 269 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, सोमवार 22 अप्रैल 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

मृत्यु शास्त्र का स्वाध्याय, सबसे बड़ा स्वाध्याय है।
Self Study of Mrityushastra, is the best self study.
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

मुठभेड़ में एक नक्सली ढेर, हथियार बरामद

बीजापुर-रायपुर (विसं)। जिले के भैरमगढ़ थाना क्षेत्र के केशकुतुल के जंगलों में पुलिस और नक्सलियों के बीच हुए मुठभेड़ में पुलिस ने एक नक्सली को ढेर कर दिया है। मौके से पुलिस ने हथियार भी बरामद किया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार भैरमगढ़ थाना क्षेत्र के केशकुतुल-केशमुंदी के जंगलों में डिवीजन सप्लाई टीम कमांडर कवासी पण्डरु सहित 15-20 नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना पर डीआरजी बीजापुर की टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली हुई थी। इस दौरान रविवार को केशकुतुल के जंगल में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुटभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में एक नक्सली के मारे जाने की सूचना है वहीं मौके से हथियार व विस्फोटक आदि मिलने की सूचना है। क्षेत्र में सघन सर्चिंग जारी है।

चुनाव ड्यूटी से लौट रहे सीआरपीएफ जवानों की बस पलटी, 10 घायल

तोकापाल-रायपुर (विसं)। लोकसभा चुनाव में सुरक्षा देकर लौट रहे सीआरपीएफ जवानों से भरी बस डिलमिली के करीब दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इसमें 10 जवानों के घायल होने की सूचना है, जिनमें से तीन की हालत नाजुक बनी हुई है। हादसा सुबह करीब 10 बजे की बताई जा रही है। घायल जवानों को डिमरापाल अस्पताल रवाना किया गया है।

कवर्धा के कोदवागोडान, पंडरिया में आयोजित विशाल जनसभा को मुख्यमंत्री ने किया संबोधित

छत्तीसगढ़ में विकास की गंगा बहाएंगे : विष्णुदेव साय

पूरी कांग्रेस पार्टी शराब के पैसे से चली : मुख्यमंत्री साय

सीएम ने कहा- हमारी नीति भी ठीक है, नियत भी ठीक है, राजनांदगांव में फिर से संतोष पांडेय को जिताना है

रायपुर/पंडरिया (विश्व परिवार)। कांग्रेस मुद्दाविहीन हो चुकी है इसलिए जनता को अलग-अलग मुद्दों पर भरमा रही है, तरह-तरह के षड्यंत्र कर रही है। लेकिन मैं आप सभी को आश्वस्त करने आया हूँ कि हताश और निराश हो चुकी कांग्रेसियों के इस बहकावे में बिल्कुल मत आइये। आरक्षण कभी खत्म नहीं होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी और गृह मंत्री अमित शाह ने भी कहा है- आरक्षण कभी खत्म नहीं होगा। जब तक छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार है महतारी वंदन योजना भी बंद नहीं होगी। महिलाओं को निरंतर इसका लाभ मिलता रहेगा। कवर्धा के कोदवागोडान, पंडरिया में आयोजित विशाल जनसभा में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने ये बातें कही।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि कांग्रेसी जगह-जगह फार्म भरवा कर जनता को ठग रहे हैं कि उनकी सरकार बनी तो महिलाओं को हर महीने 8 हजार और साल में एक लाख देंगे। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं होने वाला है। श्री साय ने कहा कि प्रदेश की जनता ने पहले ही छत्तीसगढ़ की सत्ता भाजपा को सौंप दी है और केंद्र में कांग्रेस के आने की कोई संभावना ही नहीं है। ये सब जानते हुए भी कांग्रेसी जनता को ठगने का नया पैंतरा ले कर आए हैं, जिसका जनता करारा जवाब देगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस लबरा पार्टी है, ठगरा पार्टी है। कांग्रेस सरकार में 36 वादे में एक भी वादे ठीक से पूरे नहीं हुए। भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ अपराधगढ़ बन गया था, भ्रष्टाचार का गढ़ बन गया था। कांग्रेस ने शराब, कोयला, रेत, सरकारी जमीन, डीएमएफ की राशि सब में घोटाला किया। प्रदेश को लूट-लूट कर कंगाल बना दिया। नरवा गरवा घुरवा बारी में घोटाला करके गोबर का पैसा भी खा गए। शराब के दो काउंटर थे, एक काउंटर का पैसा कांग्रेस सरकार को जाता था, दूसरे काउंटर का पैसा सोनिया-राहुल-प्रियंका के पास जाता था। पूरी कांग्रेस पार्टी छत्तीसगढ़ के शराब के पैसे से चली। तभी तो छत्तीसगढ़ की जनता ने 2023 में कांग्रेस को सरकार से आउट कर दिया।

उन्होंने कहा कि भूपेश बघेल की सरकार ने युवाओं को जुआ का लत लगा दिया। जो छत्तीसगढ़ के लिए शर्म की बात है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस शासन में हुए घोटाले के आरोपी आज जेल की हवा खा रहे हैं। छः महीने से एक साल हो गए उनका जमानत नहीं हो रहा है। आज भी कई भ्रष्ट अधिकारी जेल गए हैं। ये सब उनके किये की सजा उनको मिल रही है। कांग्रेस को फिर से सबक सिखाना है, खाता खोलने भी नहीं देना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने आजादी के बाद 55 से 60 वर्षों तक देश में राज किया। लेकिन आदिवासियों का कोई विकास नहीं किया। उसे केवल बंधुआ मजदूर समझा, वोट बैंक समझा। जबकि भाजपा ने आदिवासियों का भरपूर सम्मान किया, कर रही है और आगे भी करेगी। उन्होंने कहा कि हमारे छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता श्रद्धेय अटल जी ने आदिवासियों के हित के लिए अलग से आदिम जाति कल्याण मंत्रालय बनाया, जहाँ आदिवासी मंत्री पदभार संभालते हैं और बजट की कोई कमी नहीं होती है। अगर कांग्रेस आदिवासियों की चिंता करती तो पहले ही उनके लिए अलग से मंत्रालय का गठन कर देती, लेकिन नहीं किया। विष्णुदेव साय ने कहा कि आज एक आदिवासी परिवार की बेटी, बहन द्रौपदी मुर्मू जी देश की राष्ट्रपति हैं। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री का दायित्व नरेंद्र मोदी जी ने मुझे सौंपा है। इसलिए हम कह सकते हैं कि आदिवासियों का हित भाजपा में ही सम्भव है। क्योंकि भाजपा में लोकतंत्र है, कार्यकर्ताओं का सम्मान है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि ये चुनाव देश के देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का चुनाव है। एक चायवाले, गरीब के बेटे मोदी जी 140 करोड़ देशवासियों के लिए दिन-रात काम करते हैं। 24 घंटे में 18 घंटे काम करते हैं। वो देश के गांव, गरीब, मजदूर, किसान सबकी चिंता करते हैं। मोदी जी ने सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास-सबका प्रयास को मूलमंत्र मानते हुए सबका विकास किया, सबको समृद्ध बनाया। उन्होंने पूरी दुनिया में भारत का मान-सम्मान बढ़ाया, भारत का डंका बजाया। उन्होंने कहा कि हमें विकसित भारत बनाना है इसलिए मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना जरूरी है। ये चुनाव मोदी जी के नेतृत्व में भारत 2029 तक दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बने इसका चुनाव है। इसलिए आप सभी भाई संतोष पांडेय को पुनः सांसद बनाइये, ये आग्रह करने आया हूँ।

जनसभा में उप मुख्यमंत्री अरुण साव, पूज्य राजीव लोचन महाराज, विधायक गण भावना बोहरा, धरमजीत सिंह, जिलाध्यक्ष अशोक साहू, रामकुमार भट्ट, पूर्व विधायक सियाराम साहू, सीताराम साहू, समुंद बाई कुर्रे, रुपेश जैन, नंदलाल चंद्राकर सहित अन्य पदाधिकारी और स्थानीय जनप्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

केंद्रीय मंत्री अमित शाह पहुंचे रायपुर, विमानतल पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किया अभिनंदन

रायपुर (विसं)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह का माना विमानतल पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अभिनंदन किया। एयरपोर्ट से निकलकर वे कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में भाजपा नेताओं की बैठक लेने पहुंचे। केंद्रीय मंत्री अमित शाह दूसरे और तीसरे चरण के चुनाव की तैयारी की समीक्षा करेंगे। वहीं पहले चरण के चुनाव का फीडबैक भी ले रहे हैं। बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सभा की तैयारी को लेकर भी चर्चा होगी। वहीं कांकेर एनकाउंटर के बाद बस्तर में चल रहे नक्सल ऑपरेशन को लेकर भी चर्चा की जाएगी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव, प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव, रामू रोहरा भी उनके साथ में कुशाभाऊ ठाकरे परिसर पहुंचे हैं। परिसर में अमित शाह का भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया है। अमित शाह रात्रि विश्राम भी कुशाभाऊ ठाकरे परिसर करेंगे।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के कांकेर जिले में 22 अप्रैल सोमवार को विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे। इसी संदर्भ में आज प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने नरहरदेव हाई स्कूल ग्राउंड कांकेर में सभा स्थल का जायजा लिया। इस दौरान कैबिनेट मंत्री केदार कश्यप और विधायक आशा राम सहित पदाधिकारी मौजूद रहे।

जेपी नड्डा की आज छत्तीसगढ़ में आम सभा

रायपुर (विसं)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा का सोमवार को राजधानी आगमन होने जा रहा है। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा सोमवार रायपुर लोकसभा के भाजपा कार्यकर्ताओं में जोश भरने रायपुर के चंद्रखुरी में एक विशाल आम सभा को संबोधित करेंगे बकौल भाजपा नेता राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा विशाल आम सभा के रूप में रायपुर की जनता को संबोधित करेंगे जहां लगभग 20 हजार की संख्या में जनसमूह के उपस्थित रहने की संभावना जताई जा रही है। आम सभा के लिए भाजपा के वरिष्ठ नेताओं प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव, रायपुर लोकसभा प्रभारी संदीप शर्मा, लोकसभा संयोजक अशोक बजाज सहित अन्य नेताओं ने चंद्रखूरी में प्रस्तावित सभा का निरीक्षण किया एवं सभा के लिए व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। आम सभा हेतु रायपुर लोकसभा अंतर्गत सभी 9 विधानसभाओं से पार्टी कार्यकर्ता सभास्थल चंद्रखूरी पहुंचेंगे।

भगवान श्रीराम के ननिहाल माता कौशल्या की पावन धरा से शाम 4 बजे राष्ट्रीय अध्यक्ष लोकसभा चुनाव हेतु भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल के पक्ष में मतदान की अपील के साथ जनता को संबोधित करेंगे। आयोजित सभा में प्रदेश के इस आम सभा में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, उपमुख्यमंत्री द्वय अरुण साव, विजय शर्मा रायपुर, कैबिनेट मंत्री और लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल, मंत्री टंकराम वर्मा सहित लोकसभा क्षेत्र के सभी विधायक एवं जिला अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ मंच साझा करेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष के आगमन से भाजपा कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह है।

ओडिशा में कांग्रेस ने दो लोकसभा, 13 विधानसभा सीटों के लिए उम्मीदवारों की सूची जारी की

भुवनेश्वर (आरएनएस)। कांग्रेस ने ओडिशा की दो लोकसभा सीटों और 13 विधानसभा क्षेत्रों के लिए उम्मीदवारों की एक नई सूची जारी की। पार्टी ने एक लोकसभा और तीन विधानसभा क्षेत्रों में उम्मीदवारों को बदल दिया है, जिनके नाम पहले जारी सूची में शामिल थे।

क्योंझर लोकसभा सीट पर मोहन हेम्ब्रम की जगह बिनोद बिहारी नायक को उम्मीदवार बनाया गया है। इसी तरह, कंधमाल संसदीय क्षेत्र के तहत कंटामाल विधानसभा क्षेत्र पर मनोज कुमार आचार्य के स्थान पर शरत कुमार प्रधान को मैदान में उतारा है। संजय कुमार मंडल ने अस्का संसदीय क्षेत्र के तहत कबिसूर्यानगर विधानसभा सीट पर बिपिन बिहारी स्वैन की जगह ली है।पार्टी ने जयंत कुमार भोई के स्थान पर भुवनेश्वर लोकसभा सीट के तहत जयदेव विधानसभा क्षेत्र के लिए कृष्णा सागरिया को भी नामांकित किया।कांग्रेस ने हाई प्रोफाइल संबलपुर लोकसभा क्षेत्र से दुलाल चंद्र प्रधान को मैदान में उतारा है, जहां भारतीय जनता पार्टी से केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और बीजू जनता दल के दिग्गज नेता प्रणब प्रकाश दास पहले ही प्रचार अभियान में उतर चुके हैं। देवकांत शर्मा को कांग्रेस ने अस्का लोकसभा क्षेत्र से मैदान में उतारा है।एक अन्य बड़े घटनाक्रम में, पार्टी ने पुरी लोकसभा क्षेत्र के निमापारा विधानसभा क्षेत्र से निष्कासित वरिष्ठ नेता सुरेश कुमार राउत्रे के बड़े बेटे सिद्धार्थ राउत्रे को टिकट दिया है।कांग्रेस ने पूर्व बीजद विधायक सिप्रा मलिक को भी मैदान में उतारा, जो 18 अप्रैल को केंद्रपाड़ा विधानसभा क्षेत्र से पार्टी में शामिल हुई थीं।इस बीच, अमिता बिस्वाल, मनोज कुमार प्रधान और ज्ञान रंजन पटनायक को क्रमशः झारसुगुड़ा, खंडापाड़ा और पिपिली विधानसभा क्षेत्रों से नामांकित किया गया है।पार्टी ने अब तक 147 विधानसभा क्षेत्रों में से 136 और 21 लोकसभा क्षेत्रों में से 19 पर उम्मीदवारों के नाम घोषित कर दिए हैं।

विकसित भारत का सपना सच हो इसके लिए मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना आवश्यक : योगी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने किया कोरबा लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी सरोज पांडेय को जिताने का आह्वान

रायपुर/कोरबा (विश्व परिवार)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज कोरबा लोकसभा क्षेत्र में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज देश की सीमाएं सुरक्षित हैं महिलाएं सुरक्षित हैं विकास के नये नये कार्य हो रहे हैं ये सब मोदी जी की ही देन है। ये नया भारत हैं जो देश के दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देता है। आज देश में हर घर नल जल है, हर घर शौचालय हैं, स्टेट हाइवे एवं राष्ट्रीय राजमार्ग हैं, एम्स हैं ये सब भारतीय जनता पार्टी की पहचान बन चुकें हैं। कांग्रेस की सरकार के समय गरीबों को अनाज नहीं मिल पाता था। युवा रोजगार के लिए पलायन करते थे। बेटियां सुरक्षित नहीं थी। परंतु अब समय बदल गया है देश सुरक्षित हैं देश की सीमाएं सुरक्षित हैं। देश में वासी सुरक्षित हैं?

उन्होंने कहा कि जब से मोदीजी प्रधानमंत्री बने और देश में कहीं भी जोर से पटाखे भी फूटते हैं तो सबसे पहले पाकिस्तान कहता है मैंने नहीं किया। ये हैं मोदी जी की ताकत। कांग्रेस शासन में जनता भूखे रहतीं थीं आज मोदी जी देश की 80 करोड़ जनता को मुफ्त में 5 ग्राम चावल दे रहे हैं। 1947 के बाद जब पाकिस्तान बड़ी अकड़ के साथ भारत से अलग हुआ था आज वहां की 20 करोड़ आबादी के पास अनाज का संकट है, और मोदी जी 80 करोड़ जनता को अनाज दे रहे हैं वो भी मुफ्त। पहले केंद्र का पैसा राज्यों में भेजा जाता था तो उसमें भ्रष्टाचार होता था परन्तु अब सीधे जन-धन खातों में चला जाता हैं। 11 करोड़ शौचालय का निर्माण हो चुका है। 10 करोड़ रसोई गैस 4 करोड़ प्रधानमंत्री आवास 11, करोड़ किसानों को किसान सम्मान निधि योजना का लाभ मिला। उत्तर प्रदेश में 56 लाख प्रधानमंत्री आवास बन चुकें हैं। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने प्रधानमंत्री आवास बनने नहीं दिया परंतु मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 18 लाख प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति दी हैं। आज देश में 2.5 करोड़ गरीबों के घर में बिजली कनेक्शन है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने घोटाले पर घोटाले किए हैं। पीएससी में, रेत, शराब, कोयला और तो और गोबर में भी घोटाला कर दिया। अयोध्या में श्रीराम का मंदिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की ही देन है कांग्रेस तो न्यायालय में एफीडेविट दी थी कि राम है ही नहीं।? नक्सलवाद, आतंकवाद से कांग्रेस की सांठगांठ है। नौजवानों को रोजगार उपलब्ध नहीं कराया उनके हाथों में तमंचा थमा दिया।? कांग्रेस समाज को बांटने का काम करतीं हैं। जब कुछ नहीं होता तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को अपशब्द कहने लगते हैं। 140 करोड़ जनता मोदी जी का परिवार है पहले चरण का चुनाव हो चुका है एक ही आवाज़ आ रही है अब की बार 400 पार, फिर एक बार मोदी सरकार। श्री आदित्य नाथ ने आगे कहा कि कोरबा लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी सरोज पांडेय शिक्षित हैं तेजतर्रार हैं। इस ऊर्जा नगरी में विकास हो इसके लिए भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी सुश्री सरोज पांडेय को जीताना हैं। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय से कहा कि आप लोग मोदी जी और सरोज पांडेय का प्रतिनिधि बनकर घर घर जाकर एक एक मतदाता से मिलना और 7 मई को भारतीय जनता पार्टी को वोट देने कहना। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया। छत्तीसगढ़ प्रभु श्री राम का ननिहाल है। माता कौशल्या का मायका है। वनवास के समय छत्तीसगढ़ की पावन धरा ने श्रीराम को शरण दी थी।

ऊर्जा नगरी जो दूसरों को ऊर्जा देती है खुद अंधेरे में है : सरोज पाण्डेय

भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी सुश्री सरोज पांडेय ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ की पावन धरा से इस भगवामय वातावरण में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का स्वागत है। योगी ने उत्तर प्रदेश को अपराध के प्रदेश से मुक्ति दिलायी और भयमुक्त प्रदेश बनाया। विकास को गति प्रदान की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने कार्यकाल के 10 वर्षों में देश को आगे बढ़ाने का काम किया है। लोकल्याणकारी योजनाएं चलाई। कोरबा की जनता भाजपा को विजयी बनाएगी मेरा विश्वास है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संकल्प पत्र में झुग्गी झोपड़ी की जगह पक्का मकान देने की गारंटी दी है। आज कोरबा में विकास शून्य है। ऊर्जा नगरी जो दूसरों को ऊर्जा देती है खुद अंधेरे में है। यहां की कांग्रेस सांसद ने खुद एक इंटरव्यू में कहा था कि कांग्रेस पार्टी में भ्रष्टाचार है। उनके कार्यकाल के समय के दो क्लेकटर भ्रष्टाचार के आरोप में जेल में हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र की बनाने की योजना पर काम कर रहे है। हमें भी कोरबा लोकसभा क्षेत्र में 7 मे को कमल फूल छाप पर बटन दबाकर भाजपा को जीताना हैं।

संक्षिप्त समाचार

राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए जिले के अंबुजा विद्यापीठ को नामित किया गया

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। सिल्वर ज़ोन फाउंडेशन नई दिल्ली प्रतिवर्ष सिल्वर ज़ोन एजुकेशनल एक्सीलेंस अवार्ड से उत्कृष्ट संस्थाओं को सम्मानित करती है। इसी क्रम में इंस्टिट्यूशन ऑफ द ईयर 2023 - 24 के लिए जिले की नामचीन शिक्षण संस्था अंबुजा विद्यापीठ को नामित किया गया है जो जिले के लिए बड़े ही गौरव की बात है। विद्यापीठ के यशस्वी प्राचार्य संजय कुमार पांडेय ने बताया कि सिल्वर ज़ोन फाउंडेशन एक ऐसी विख्यात संस्था है जो गणित, इंग्लिश, सामाजिक विज्ञान, सामान्य ज्ञान और हिंदी जैसे विषयों में राष्ट्रीय व अंतर राष्ट्रीय स्तर पर ओलम्पियाद का आयोजन करती है। विदित हो कि विद्यालय के विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों के ओलम्पियाद में हिस्सा लेकर राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। यह पुरस्कार समारोह 15 जून 2024 नई दिल्ली के कल्चरल सेंटर में आयोजित किया जाएगा। पुरस्कार स्वरूप संस्था को प्रमाण पत्र, स्मारिका व 10 हजार रुपये की धनराशि प्रदान की जाएगी। अंबुजा विद्यापीठ विगत 35 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में अपने विशिष्ट योगदान के लिए जाना जाता है व आज भी यहां के विद्यार्थी नित नए नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं जिसके लिए प्राचार्य संजय पाण्डेय का योगदान प्रशंसनीय है। इस उपलब्धि के लिए जहां विद्यालय परिवार में प्रसन्नता है वहीं संयत्र के क्लस्टर हेड रामभव गद्ध, महावीर सिंह बोलिया व विद्यालय प्रबंधन ने विद्यालय परिवार को शुभकामनाएं दी हैं।

दो नाबालिग लड़कियां लापता

रायपुर (आरएनएस)। शहर के दो अलग-अलग थाना क्षेत्र से दो नाबालिग लड़कियां लापता हो गई। दोनों ही मामलों में पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ अपहरण का मामला दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार कंकालीपारा रोड निवासीर 47 वर्षीय प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि अज्ञात व्यक्ति ने उसकी 17 वर्षीय नाबालिग लड़की को बहला फुसलाकर भगा ले गया है। वहीं दूसरे मामले में 22 वर्षीय प्रार्थी ने खमतराई थाना में शिकायत किया कि अज्ञात व्यक्ति ने उसकी 16 वर्षीय बहन को बहला फुसलाकर भगा ले गया है। दोनों ही मामलों में पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ पहरण का मामला दर्ज कर जांच में लिया है।

मकान से 3 नग कम्प्यूटर सिस्टम पार

रायपुर (आरएनएस)। लोहार चौक स्थित ई साक्षरता केंद्र ब्राम्हणपारा मकान का ताला खोलकर अज्ञात आरोपी ने 3 नग कम्प्यूटर सिस्टम पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर आजाद चौक पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी तेनसिंह नागेश 33 वर्ष लोहार चौक का रहने वाला है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि ई साक्षरता केंद्र ब्राम्हणपारा मकान का ताला खोलकर अज्ञात चोर ने कमरे में रखे 3 नग कम्प्यूटर सिस्टम पार कर दिया। चोरी गए कम्प्यूटर सिस्टम की कीमत करीब 30 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर आजाद चौक पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ धारा 457,380 के तहत अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव पर निकली शोभायात्रा

भिलाई (आरएनएस)। शनिवार को सकल जैन समाज द्वारा जैन मिलन त्रिवेणी जैन तीर्थ सेक्टर 6 में सुबह भगवान महावीर स्वामी जी के अष्टधातु की प्रतिमा पर अभिषेक पूजन शांति धारा हुई। उसके पश्चात जैन मिलन अध्यक्ष मुकेश जैन एवम दानमल पोरवाल जी राजीव जैनको, अरविंद जैन, निर्मल कोचर, केसी जैन, कमल चंद जैन, महावीर निगोतिया, गौतमचंद जैन, एवं समाज के विशिष्ट जनों द्वारा ध्वाजारोहण किया गया। भगवान महावीर स्वामी जी के जन्म कल्याणक के भव्य शोभायात्रा सहित भव्य दिव्य चांदीनुमा रथ में सवार भगवान के माता पिता कुबेर बने अशोक जैन, छाया जैन, संजय शाह जैन ध्वजा लिये छोटे बालक-बालिकाओं, महिलाओं सहित अनेक गणमान्य शोभायात्रा में शामिल थे।

अतिशय क्षेत्र तिजारा में आचार्यों संघों के सानिध्य में मनाई गई भगवान महावीर स्वामी की 2623वीं जन्म जयंती

विश्वमैत्री के आधार हैं भगवान महावीर के पंचशील सिद्धांत : भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज

तिजारा (विश्व परिवार)। वर्तमान शासन नायक जैन धर्म के 24 वें तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव आज सम्पूर्ण विश्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। भारतीय वसुन्धरा के अतिशय क्षेत्र देहरा-तिजारा में इय आचार्य संघों के ससंघ सानिध्य में भगवान महावीर स्वामी का 2623 वाँ जन्म कल्याणक महामहोत्सव विविध धार्मिक आयोजनों के साथ सानन्द सम्पन्न किया गया।

20 अप्रैल की शुभ प्रात: बेला में भावलिंगों संत आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज का ससंघ भव्य मंगल प्रवेश अतिशय क्षेत्र तिजारा की धरा पर हुआ। क्षेत्र पर विराजमान आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ससंघ ने आगंतुक आचार्य संघ की भव्य मंगल आगवानी की। द्वय आचार्य संघों का वात्सल्य पूर्ण मिलन देखकर उपस्थित श्रद्धालुओं का मन-मयूर नाच उठा। सभी श्रद्धालु भक्तगण मुक्तकंठ से वात्सल्य मिलन की प्रशंसा करते हुए नजर आ रहे थे।

21 अप्रैल को सम्पूर्ण विश्व में आयोजित श्री महावीर जयंती महापर्व पर भावलिंगी संत आचार्यश्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ने भगवान महावीर क्वामी के दिव्य सूत्रों का शंखनाद करते हुए कहा कि भगवान महावीर ने हमें अहिंसा धर्म का उपदेश दिया है। अहिंसा का व्यापक स्वरूप समझने योग्य है। भगवान महावीर ने हमें अहिंसक बनाया है पर ध्यान रखना भगवान महावीर ने हमें कायर और नपुंसक नहीं बनाया। भगवान महावीर का अनुयायी अहिंसक जीवन शैली अपनाता है, न्याय नीति से अपना जीवन जीता है किन्तु कोई अन्याय-अनीति करता है तो उसका विरोध करना भी अहिंसा है। भगवान महावीर ने दो प्रकार की अहिंसा का उपदेश दिया- द्रव्य अहिंसा और भाव अहिंसा। आज आप द्रव्य अहिंसक बनने में तो अपना गौरख समझते हैं किन्तु भाव अहिंसा पर आपका विचार नहीं है। निरंतर आपसी राग-द्वेष बड़ते चले जा रहे हैं। बन्धुओं। ध्यान रखना, भाव अहिंसा जहाँ है वहाँ निश्चित रूप से द्रव्य अहिंसा कायम है। किन्तु जहाँ भाव अहिंसा नहीं है वहाँ भगवान महावीर स्वामी का अहिंसा परमो धर्म- यह सूत्र चरितार्थ नहीं हो सकता। आप नारा लगाते हो - जिओ और जीने दो किन्तु सही मायने में देखा जाए तो आप न तो स्वयं जीते हो न जीने देते हो। आपके परिवार में ही दो भाईयों में राग-द्वेष गैर भाव जन्म ले लेता है। अदालतों तक आपका रिश्ता कठघरों में खड़ा दिखाई देता है। ये कैसा आपका अहिंसा धर्म है? बन्धुओ ! भगवान महावीर ने पंचशील सिद्धांत का संविधान दिया। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यह पंच शील सिद्धांत विश्व मैत्री की आधारशिला है। आज भी यदि भगवान महावीर के पंचशील सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए तो सम्पूर्ण विश्व में मैत्री स्थापित की जा सकती है।

-रजत जैन (पप्पू)

भगवान महावीर जन्मोत्सव पर निकली धर्मप्रभावना वाहन रैली, जैन मंदिरों में हुआ जन्माभिषेक

महोत्सव में नवयुवकों ने 108 यूनिट रक्तदान किया

ललितपुर (विश्व परिवार)। जैन धर्म के 24वे तीर्थंकर भगवान महावीर का 2623 वां जन्मजयंती महोत्सव आज नगर के जैन मंदिरों में उत्साह के साथ मनाया गया प्रात:काल नगर में प्रभातफेरी के उपरान्त श्रीजी का अभिषेक, तीर्थंकर बालक का पालाना -हजयूला श्रद्धालुओं ने भक्तिपूर्वक किया। नगर में धर्मप्रभावना वाहन रैली निकली एवं नवयुवकों ने 108 यूनिट रक्तदान किया जिन्हें दिगम्बर जैन पंचायत द्वारा रक्तवीर उपाधि से सम्मानित किया गया।

आज प्रात:काल सावरकर चौक स्थित पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अटामंदिर एवं गांधीनगर आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से नगर में प्रभातफेरी निकली जिसमें सुधासागर कन्या इण्टर कालेज,पब्लिक स्कूल, शन्तिसागर जूनियर हाईस्कूल, महावीर वाल विद्या मंदिर, आचार्य विद्यासागर पाठशाला अटामंदिर, चंद्रप्रभु जिनालय डो-सजयाघाट, नयामंदिर, बडामंदिर, अभिनंदनोदय तीर्थ क्षेत्र क्षेत्रपाल मंदिर जी, श्री आदिनराथ मंदिर नईवस्ती, श्री शान्तिसागर पाठशाला के बच्चो के साथ दिगम्बर जैन महिला मण्डल,साधू वैयावमत्ति महिला मण्डल, विद्या आदर्श महिला मण्डल, नंदा सुनंदा महिला मण्डल, सुधासिंधू महिला मण्डल,पूर्णमति महिला मण्डल, चन्द्रप्रभु महिला मण्डल नयामंदिर, जैन मिलन अरहंत शाखा, चंद्रप्रभु महिला मण्डल आदर्श महिला मण्डल अटामंदिर विद्यागुरू महिला मण्डल वाहुवलिनगर, प्रतिभा स्थली अभिभावक महिला मण्डल जिनवाणी सुरक्षा महिला मण्डल, आदिनाथ महिला मण्डल सिविल लाइन, पुनीत विद्या वहू मण्डल, जैन मिलन मुख्य शाखा सिविल लाइन नीली श्राविका महिला मण्डल ने पाठशाला परिवार निर्देशिका सविता दीदी,अनीता मोदी, प्रभातफेरी प्रभारी प्रफुल्ल कुमार संजीव जैन लकी के संयोजन में किया।

मुख्य आयोजन श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अभिनंदनोदय तीर्थ में हुआ जहां श्री जी के अभिषेक शान्तिधारा की मांगलिक क्रियाओं में सम्मलित हुए। तीर्थंकर वालक का पालना -हजयूला मंदिर प्रथम - हजयुलाने का पुर्ण्याजन रामप्रकाश संजीव जैन ममता स्पोर्ट ने किया। नगर के जैन मंदिरों में परम्परागत धार्मिक आयोजन हुए जिसमें श्रद्धालुओं ने सम्मलित होकर पुर्ण्याजन किया। इसके उपरान्त धर्मप्रभावना वाहन रैली का शुभारम्भ हुआ जिसमें धर्मपताकाए लेकर नवयुवक सैकडों की संख्या में नगर के प्रमुख के मार्गो पर निकले जिसका संयोजन स्याद्वाद्ध वर्द्धमान सेवा संघ के पदाधिकारी सत्येन्द्र जैन गदयाना, शुभेन्दु जैन वंट, संजय सिंघई बम्हौरी, अनुज जैन आशु, संजीव जैन वंसल, अर्पित जैन, विकास जैन एलआइसी, अंकित खिरिया,हितेन्द्र जैन पिंकू, अनिकेत जैन, दीपक जैन डोगरा, शिक्षक पुष्पेन्द्र जैन अमित जैन अन्तिम जैन द्वारा किया गया। मध्यान्ह में वीर क्लव के संयोजन में सावरकरचौक पर स्वल्पाहार एवं भोजन वितरण हुआ।

अभिनंदनोदय तीर्थ पर जैन युवा संगठन के तत्वावधान में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें नवयुवकों ने 108 यूनिट रक्तदान कर पुर्ण्याजन किया। दिगम्बर जैन पंचायत द्वारा रक्त वीर की उपाधि से अध्यक्ष डॉ अक्षय टडैया, महामंत्री आकाश जैन, कोषाध्यक्ष सौरभ सीए, सनत जैन खजुरिया, शीलचंद अनौरा, संजीव जैन सीए, कैप्टन राजकुमार जैन, प्रबंधक मोदी पंकज जैन, अशोक दैलवारा, धार्मिक संयोजक प्रतीक जैन इमलिया राकेश जैन रिंकू, अक्षय अलया, मनोज जैन बबीना द्वारा सम्मानित किया गया। जिसमें मंगलवार भक्ताम्मर मण्डल एवं जैन युवा संगठन के पदाधिकारी प्रदीप जैन सतरवांस अध्यक्ष गौरव जैन टोनू, विजय जैन कल्लू पत्रकार, श्रीस सिंघई, अंकुर जैन शानू, विशाल जैन गंगचारी, सौरभ जैन रीतेश जैन चंद्रेश जैन, चिराग जैन, अकित जैन नीलेश रसिया, संकेत जैन, अभय जैन ग्राफिक्स निमेश जैन डा0 प्रिया जैन का विशेष सहयोग रहा। **-अक्षय अलया**

विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव

आठ दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन निकाली गई भव्य शोभायात्रा, आसपास के क्षेत्रों से भी जैन समाज के लोग हुए शामिल

दुर्ग (विश्व परिवार)। भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति दुर्ग द्वारा इस वर्ष भगवान महावीर का 2623 वॉ जन्म महोत्सव 14 अप्रैल से 21 अप्रैल तक सामाजिक-सांस्कृतिक एवं सेवा के विभिन्न कार्य इन आठ दिनों में आयोजित किए गए। आज प्रात: आठ बजे श्वेतांबर मंदिर एवं दिगंबर मंदिर से भगवान का रथ गांधी चौक मोती कंपलेक्स होते हुए मारवाड़ी स्कूल पहुंचा जहां विधि विधान से श्वेतांबर समाज के लोग मारवाड़ी स्कूल में तथा दिगंबर समाज के लोग कस्तुरबा बाल मंदिर में विधि विधान के साथ भगवान महावीर स्वामी की पूजा- अर्चना की पश्चात वहीं से भव्य शोभायात्रा प्रारंभ हुई जो मान होटल, गुजराती, धर्मशाला, फरिश्ता, कंपलेक्स, स्टेशन रोड, भाजपा कार्यालय, शनिचरी बाजार होते हुए सदर जैन मंदिर एवं दिगंबर जैन मंदिर में समापन हुआ।

भगवान महावीर का 2623 वां जन्म कल्याणक महोत्सव पूज्य गुरुदेव डॉ सतीश मुनि, कल्प यज्ञ सागर जी हेम प्रभा श्री जी के सानिध्य में मनाया गया। भगवान महावीर के 2623 में जन्म महोत्सव में शोभायात्रा में इतनी बड़ी संख्या में जन सेलाब पहली बार देखने को मिला जैन समाज के सभी वर्ग के लोग, बच्चे, महिला युवक-युवतियों एवं जैन समाज के विभिन्न संगठन, युवा संगठन, बालिका संगठन, महिला संगठन ने हर्ष और उल्लास के वातावरण में इन सात दिनों के सभी कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर भाग लिया और सभी कार्यक्रमों को अभूतपूर्व सफलता के साथ संपादित किया।

शोभा यात्रा में राजा बाफना की भक्ति में थिरके लोग : राजा बाफना की भक्ति गीतों ने समां बांधा राजा बाफना के लयबद्ध गीत संगीत को शानदार प्रस्तुति ने शोभा यात्रा को चार चांद लगा दिया युवा समुदाय भक्ति गीतों पर थिरकते हुए भगवान महावीर के जयघोष के साथ इस शोभायात्रा में एक नया इतिहास रच दिया।

विशाल भंडारा में लोगों ने भरपेट भोजन किया : जैन समाज के सदस्यों ने विशाल भंडारे का आयोजन पुराना बस स्टैंड दुर्ग में किया जिसमें आम जनता ने भंडारे में 2500 लोगों ने भरपेट भोजन ग्रहण किया। निर्मल बाफना एवं उनके दोस्त यार ग्रुप में विशाल भंडारा में सहयोग किया जिसमें आज हजारों की संख्या में भंडारे का लाभ लिया

आज की भव्य शोभायात्रा में विधायक गजेंद्र यादव राजेंद्र साहू अरुण वोरा, महापौर धीरज बाकलीवाल सहित जैन समाज के सभी गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अध्यक्ष अजय श्री श्री माल, महामंत्री चुन्नीलाल जैन, उपाध्यक्ष संदीप लुहाडिया, शशांक चोपड़ा, किशोर श्री श्री माल, सहमंत्री पीयूष पारख, मनोज चाकलीवाल, राजा कांकरिया, कोषाध्यक्ष रितेश बुरड एवं प्रचार प्रसार की जिम्मेदारी नवीन संचेती निभाते हुए सभी कार्यक्रमों को सफलता के आयाम पर स्थापित किया।

निशुल्क नेत्र एवं दंत चिकित्सा, शिविर का आयोजन फल एवं सकोरे का वितरण : निशुल्क दंत एवं नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन गंज मंडी प्रांगण में किया गया जिसमें सैकड़ो की संख्या में लोग लाभान्वित हुए और लगभग डेढ़ सौ चश्मा का वितरण किया गया जिला चिकित्सालय परिसर एवं अनाथ आश्रम में फल वितरण किया गया

चिलचिलाती गर्मी को देखते हुए पशु पक्षियों की जीवन रक्षा के लिए भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के द्वारा स्कोर का वितरण किया गया आज हर्ष और उल्लास के वातावरण में श्री कृष्ण गौशाला में जाकर गायों को गुड और सब्जी खाने का कार्य किया गया जिसमें बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग इस जीव दया के कार्य में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

गौतम महावीर प्रसादी का वितरण : जैन समाज के सभी वर्ग के लोगों के लिए आज गौतम महावीर प्रसाद जी का आयोजन ऋषभदेव परिसर दुर्ग में किया गया जिसमें लगभग 4000 जैन समाज के लोगों ने इस प्रसादी को ग्रहण किया।

अनूज जैन की भक्ति गीतों का शानदार समा होगा : आज रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में गंज मंडी प्रांगण में एक शाम वीर के नाम भक्ति संध्या का आयोजन है जिसमें परम गुरु भक्त अनुज जैन अपने सु मधुर स्वरों से भक्ति का जलवा बिखेरेंगे। **-नवीन संचेती**

प्रियंका जी की आंख में आज भी भूपेश बघेल के भ्रष्टाचार के दिए पैसे का पर्दा पड़ा हुआ है : सुनील सोनी

प्रियंका गाँधी संविधान बदलने की डर दिखाकर वोट मांगने की कोशिश कर रही हैं: सांसद

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर सांसद सुनील सोनी ने आज भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में आयोजित संवाददाता सम्मलेन को संबोधित करते हुए कहा कि प्रियंका जी आंख में आज भी भूपेश बघेल के भ्रष्टाचार के दिए पैसे का पर्दा पड़ा हुआ है तभी वे सिर्फ वही देखते हैं जो भूपेश कहते हैं, वही बोलता है जो भूपेश बुलवाना चाहते हैं और इसलिए आज फिर उन्होंने भूपेश गाथा गायी वही झूठ कहा जो भूपेश उससे बुलवाना चाहते है। प्रियंका जी अगर भूपेश बघेल सरकार की योजनाये इतनी ही अच्छी होते तो प्रचंड बहुमत से चुनी हुई सरकार पांच साल में ही क्यों बाहर हो जाती।

रायपुर सांसद सुनील सोनी ने कहा कि भूपेश बघेल आज भी अपनी गलती का ठीकरा अपने विधायकों पर फोड़ रहे हैं जबकि वह मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने जयसिंह अग्रवाल के भ्रष्टाचार के पत्र, मोहन मरकाम द्वारा उठाए गए डीएमएफ घोटाले का मामला और सिंहदेव के द्वारा उठाए गए प्रधानमंत्री आवास के विषय को नजरअंदाज कर दिया था। इसीलिए कांग्रेस के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं पूर्व विधायकगण भूपेश और गाँधी परिवार पर आरोप लगाकर कांग्रेस छोड़ कर लोग बाहर जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में मतदान का अधिकार की बात करने वाली प्रियंका ने अपने दादी द्वारा लगाया गया आपातकाल के लिए माफी मांगना चाहिए।

रायपुर सांसद सुनील सोनी ने प्रियंका गाँधी से सवाल करते हुए कहा कि जब आप छत्तीसगढ़ आई तो आपके पीए द्वारा कांग्रेस नेत्री अर्चना गौतम से किया दुर्व्यवहार के बारे में अपने क्यों कुछ नहीं बोला। अध्ययन की कमी कांग्रेस में बहुत ज्यादा है प्रियंका जी को मालूम नहीं की छत्तीसगढ़ के किसानों से 3100 में 21 क्विंटल धान खरीदा जा रहा है और सारा पैसा एकमुश्त मिलता है कांग्रेसियों के समान उन्हें रुला-रुला कर नहीं दिया जाता और उनके साथ-साथ 6000 रूपए किसान सम्मान निधि भी दिया जाता है। साथी उनको 2 साल का बकाया बोनस भी दिया गया है। उन्होंने कहा कि शायद प्रियंका जी भूपेश बघेल ने बताया नहीं कि बिजली बिल आज भी आधा है।

रायपुर सांसद सुनील सोनी ने कहा कि भूपेश ने वादा करके भी महिला स्व सहायता समूह के कार्य छीनकर अपने मित्रों को दे दिए थे साय सरकार आते ही उसे पुन: वह कार्य मिल गया है। भूपेश जी 35 किलो चावल देते थे वह योजना भाजपा शासन काल में बनी है। जबकि भूपेश बघेल ने कोरोना कल में प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा दिए गरीब अन्य कल्याण योजना के अतिरिक्त 5 किलो चावल पर 5000 करोड़ का भ्रष्टाचार किया वह 33 महीने तक उसे गरीबों तक पहुंचने नहीं दिया। छत्तीसगढ़ में गौठानों की प्रशंसा करने वाली प्रियंका जी को यह भी बताना चाहिए था, कि कैसे गौठानों के नाम गोबर तक में कांग्रेस की सरकार ने घोटाला किया गया।

रायपुर सांसद सुनील सोनी ने कहा कि प्रियंका जी संविधान बदलने की डर दिखाकर वोट मांगने की कोशिश कर रही हैं, क्योंकि इन्हें डर है कि कांग्रेस और इंडी गठबंधन के सारे भ्रष्टचारी नेता जेल चले जाएंगे। रही बात सविंधान बदलने कि तो कांग्रेस के न्याय पत्र में है कि संविधान बदलकर मानहानि केस, 370 धारा कांग्रेस खत्म करेगी। प्रियंका जी, जनता जानती है कि कांग्रेस झूठे न्याय पत्र से वोट बटोरेगी वह जानती है कि आपकी छत्तीसगढ़ कांग्रेस सरकार ने 500 रुपए निराश्रित महिलाओं पेंशन, विधवा पेंशन, बुजुर्ग पेंशन नहीं दे पाई तो 1 लाख रूपए सालाना देने कि बात झूठी रहेगी।

रायपुर सांसद सुनील सोनी ने कहा कि परिवारवाद और भ्रष्टाचार की बात आपके मुंह से शोभा नहीं देती है। आपकी दादी इंदिरा जी को परिवारवाद की बात चिंता नहीं थी, तो क्यों राजीव गांधी, राहुल गांधी और खुद आपके अलावा किसी नेता की कांग्रेसी में नहीं चलती है। और भ्रष्टाचार के आरोप में आपके शासनकाल के अनेकों लोग जेल में है जिन्हें बेल तक नहीं मिली आपके भूपेश सरकार ने भ्रष्टाचार के मामले में भगवान तक को नहीं बक्शा।

लोकसभा चुनाव : 24 अप्रैल की शाम 6 बजे थमेगा चुनावी शोरगुल

कवर्धा (विसं)। भारत निर्वाचन आयोग के अनुपालन में लोकसभा निर्वाचन 2024 में स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण तरीके से निर्वाचन के लिए दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। जिसको ध्यान में रखते हुए सभी दिशा निर्देशों का पालन करना आवश्यक है। मतदान दिवस के 48 घंटा पूर्व किसी भी मतदान केन्द्र के 200 मीटर परिधि में चुनावी प्रचार-प्रसार, राजनीतिक दल का प्रवेश निषेध रहेगा। निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त प्रेक्षक, अधिकृत अधिकारी, पुलिस अधिकारी को छोड़कर मतदान केन्द्र के 100 मीटर की परिधि में मोबाईल फोन, वायरलेस आदि की अनुमति नहीं होगी। निष्पक्ष तथा शांतिपूर्ण निर्वाचन को दृष्टिगत रखते हुए लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 134 बी अनुसार किसी भी व्यक्ति द्वारा मतदान केन्द्र के आसपास शस्त्र धारण नहीं किया जाएगा। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी जनमेजय महोबे ने भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदेशों का कड़ाई से पालन करने के निर्देश सभी अधिकारियों को दिए है।

भगवान महावीर स्वामी की सकल जैन समाज ने निकाली शोभायात्रा, भक्ति और आस्था का उल्लास देखते बना

रामगंजमंडी (विश्व परिवार)। रामगंजमंडी नगर मे श्रमण भगवान् महावीर स्वामी का जन्मकल्याण महोत्सव मनाया गया सुबह से ही भक्तो का मंदिर जी मे आना शुरू हो गया प्रात: बेला मे सकल जैन समाज ने प्रभात फेरी निकाली उसके उपरान्त श्रीजी का अभिषेक पूजन किया गया प्रात 9 बजे सकल जैन समाज रामगंजमंडी ने श्रीजी की शोभायात्रा निकाली जो एकता का पर्याय बनी इस यात्रा मे वह बात सार्थक सिद्ध होती दिखाई दी की धर्म का रथ युवा ही खीचेगे युवा ही धरम को आगे बढाएगे श्रीजी का रथ युवाओं ने अपने हाथो से खीचा जब श्रीजी की शोभायात्रा निकली तो सकल जैन समाज की एकता देखते बनी आस्था उमंग का सैलाब देखते बन रहा था पुरुष वर्ग सफ़ेद परिधान महिला वर्ग केसरिया परिधान मे शामिल रही प्रभु महावीर की जय जैन धरम की जय जयकारो से रामगंजमंडी गूंज रही थी पुरुष वर्ग व महिला बच्चे भक्ति मे झूमते दिख रहे थे मानो लग रहा था रामगंजमंडी महावीर मय हो गई हो शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से होती हुयी श्वेताम्बर जैन मंदिर शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर एवम महावीर मंदिर पहुची रथयात्रा मे शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के मंगल कलश का सोभाग्य मनोज कुमार मनन कुमार चांद्वाड परिवार एवम महावीर दिगम्बर जैन मंदिर के मंगल कलश का सोभाग्य विनोद कुमार सुनील कुमार सुरलाया को प्राप्त हुआ श्रीजी के रथ मे खचांजी बनने का सोभाग्य सूरजमल राजेंद्र कुमार बागडिया एवम सारथी बनने का सोभाग्य जम्बूकुमार लवी विनायका परिवार को प्राप्त हुआ शोभायात्रा उपरांत शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर एवममहावीर दिगम्बर जैन मंदिर मे अभिषेक किए जैन मंदिर की माला एवम आरती का पुण्य लाभ राकेश कुमार मुकेश कुमार ओसारा को प्राप्त हुआ श्रीशांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मे सभी पुण्य लाभ कर्ता का अध्यक्ष दिलीप विनायका उपाध्यक्ष कमल लुहाडिया चेतन बागडिया मंत्री राजकुमार गंगवाल केवलचंद लुहाडिया के द्वारा दिगम्बर जैन समाज की और से अभिनन्दन किया गया कार्यकम के अंत मे स्नेह भोज का आयोजन किया गया जिसका सोभाग्य श्री कस्तूरचंद लालचंद राहुल कुमार सिंघल परिवार को प्राप्त हुआ एवम इन्ही के परिवार को शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मे माला एवम आरती का लाभ प्राप्त हुआ।

-अभिषेक जैन लुहाडिया

कांग्रेस सेवादल की रीढ़ की हड्डी, संगठन के बूते लड़ेंगे व जीतेंगे

डॉ. महंत ने कार्यकर्ताओं में भरा जोश

कोरबा (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने जिला कांग्रेस सेवादल व महिला कांग्रेस सेवादल ग्रामीण एवं शहर के प्रबंध कार्यकारिणी एवं ब्लॉक अध्यक्षों सहित प्रदेश पदाधिकारियों की बैठक ली। समस्त पदाधिकारियों का मार्गदर्शन किया गया।

उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए डॉ.महंत ने कहा कि सेवादल संगठन कांग्रेस की रीढ़ की हड्डी है। कांग्रेस के सेवा कार्यों से लेकर संगठन को आगे बढ़ाने में सेवादल की भूमिका हमेशा से महत्वपूर्ण रही है। चुनाव का समय हो या संगठनात्मक रूप से कांग्रेस को मजबूत करने के अवसर हों, सेवादल के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता एक कदम आगे बढकर कार्य करते आए हैं। एक बार पुनरू लोकसभा चुनाव में यह अवसर आया है जिसमें सेवादल के सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं को कमर कसकर जुट जाना है। डॉ.महंत ने इसी तरह जिला आदिवासी कांग्रेस कमेटी कोरबा एवं युवा प्रकोष्ठ ग्रामीण एवं शहर प्रबंध कार्यकारिणी, ब्लॉक अध्यक्षों एवं प्रदेश पदाधिकारियों की बैठक लेते हुए मार्गदर्शन दिया। जिला कांग्रेस कमेटी पिछड़ा वर्ग विभाग के भी ग्रामीण एवं शहर के पदाधिकारियों की उन्होंने बैठक ली तथा मौजूदा लोकसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी ज्योत्सना चरणदास महंत के लिए लोगों के बीच घर-घर जाकर कांग्रेस के न्याय पत्र के 5 न्याय एवं 25 गारंटी को प्रमुखता से बताने की अपील की। इसी तरह डॉ.महंत ने सिस्टा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आरपी खाण्डे सहित अन्य पदाधिकारियों से मुलाकात की। बैठकों के दौरान प्रमुख रूप से महापौर राजकिशोर प्रसाद, जिला कांग्रेस कमेटी ग्रामीण अध्यक्ष सुरेन्द्र प्रताप जायसवाल, सभापति श्यामसुंदर सोनी, मुकेश राठौर, सेवादल अध्यक्ष प्रदीप पुरायणे, महिला कांग्रेस सेवादल अध्यक्ष सोनी कर्ष, विजय धीवर, श्रीराम साहू, राजकमल बंजारे, धनेश्वरी चैहान, लता धीवर, पूजा मिश्रा, मिली मुस्कान, सीमा लाल, लक्ष्मी महंत, पिंकी मानिकपुरी, आगर बंजारे, सविता पाठक, कौशल्या भगत, उषा रानी महंत, दिलीप टंडन, भगवती महंत, गजानंद प्रसाद साहू, राजेश मानिकपुरी आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सात कबाड़ी चढ़े पुलिस के हत्थे

भाटापारा (विश्व परिवार)। बलौदाबाजार-भाटापारा जिला पुलिस द्वारा भाटापारा शहर, ग्रामीण एवं सिमगा क्षेत्र में कबाड़ व्यापारियों के खिलाफ औचक जांच अभियान चलाया है। पूरे अभियान में 7 कबाड़ियों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए करीब साढ़े 3 लाख का कबाड़ जब्त किया गया है। आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज कर वैधानिक कार्रवाई की गई है। पकड़े गए कबाड़ियों में मोहम्मद जावेद पिता सलीम 34 वर्श सदर वार्ड भाटापारा शहर, मोहम्मद रफीक पिता हाजी रजक 53 निवासी सदर वार्ड भाटापारा शहर, तौफिस अली पिता अनवर अली संत रविदास वार्ड भाटापारा शहर, हरीश कुमार पिता राम कुमार 30 वर्ष निवासी शक्तिवार्ड भाटापारा शहर, हरिराम पिता रिखदेव 60 वर्श निवासी नाका नंबर 1 के पास, रामकुमार पिता सुखेलाल बंजारे 60 वर्ष भाटापारा, मोहम्मद कदीम शेख पिता मोहम्मद हनीफ 30 वर्ष अजाद चौक सिमगा थाना सिमगा।

लोकसभा निर्वाचन 2024 : दर्री जोन के कम मतदान वाले क्षेत्र में निकाली गई मतदाता जागरूकता रैली

अपने मताधिकार का उपयोग करने मतदाताओं से की गई अपील, दिलाई गई मतदाता शपथ

कोरबा (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम कोरबा के दर्री जोन अंतर्गत विगत चुनाव में मतदान प्रतिशत कम होने वाले क्षेत्र में आज मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन निगम द्वारा किया गया, जिसमें काफी संख्या में मतदाताओं ने भाग लिया। निगम के अपर आयुक्त श्री विनय मिश्रा ने उपस्थित मतदाताओं से अपने मताधिकार का उपयोग कर अनिवार्य रूप से मतदान करने की अपील किए जाने के साथ ही उन्हें मतदाता शपथ ग्रहण कराई। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के मार्गदर्शन में लोकसभा निर्वाचन 2024 के मद्देनजर मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। विगत चुनावों में जिन क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत कम रहा है, उन क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत बढ़ाने की दिशा में विशेष फोकस रखते हुए अभियान संचालित हो रहे हैं। इसी कड़ी में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री संबित मिश्रा एवं निगम आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई के दिशा निर्देशन में नगर पालिक निगम केरबा के दर्री जोनांतर्गत एच.टी.पी.एस. आवासीय परिसर तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में मतदाता रैली का आयोजन किया गया तथा रैली के माध्यम से मतदाताओं को यह संदेश दिया गया कि वे अपने मताधिकार का उपयोग अनिवार्य रूप से करें। निगम के अपर आयुक्त श्री विनय मिश्रा ने उपस्थित मतदाताओं को अपने मताधिकार का अनिवार्य रूप से उपयोग करने का संकल्प दिलाया तथा मतदाता शपथ ग्रहण कराई। उपस्थित लोगों ने शपथ लेते हुए कहा कि हम भारत के नागरिक लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

कलेक्टर-एसपी घटनास्थल पर पहुंचे, राहत एवं बचाव कार्य का लिया जायजा

संबलपुर के आईजी और झारसुगुड़ा जिले के कलेक्टर एसपी भी घटना स्थल पर मौजूद

रायगढ़ (विश्व परिवार) । ओडिसा में महानदी में हुई नाव दुर्घटना में राहत व बचाव कार्य जारी है। कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल, पुलिस अधीक्षक श्री दिव्यांग पटेल व सीईओ जिला पंचायत श्री जितेन्द्र यादव घटनास्थल पर पहुंच चुके हैं। यहां आईजी नॉर्दन रेंज संबलपुर, श्री हिमांशु कुमार लाल, झारसुगुड़ा जिले की कलेक्टर झारसुगुड़ा सुश्री अबोली सुनील नरवने, एसपी झारसुगुड़ा श्री परमार स्मित परशोत्तमदास भी मौके पर मौजूद है। यहां ओडीआरएएफ और फायर टीम के गोताखोर राहत और बचाव कार्य में लगे हुए हैं। भुवनेश्वर से स्कूबा डाइवर को भी बुलवाया जा रहा है। घटना के बारे में अब तक प्राप्त जानकारी के अनुसार नाव पलटने से 1 महिला की मृत्यु हुई है, जिसका शव बरामद कर लिया गया है, उनकी उम्र लगभग 35 वर्ष बताई जा रही है। अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार 7 लोग लापता हैं। जिसमें 4 महिलाएं और 3 बच्चे शामिल हैं। प्रभावित लोग खरसिया ब्लॉक के अंजोरीपाली के हैं। नाव में खरसिया ब्लॉक के अंजोरीपाली व गोर्रा तथा रायगढ़ ब्लॉक के कोतरलिया और छपोरा के लोग सवार थे। मृतक महिला अंजोरीपाली की थी। कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल व पुलिस अधीक्षक श्री दिव्यांग पटेल ने सुरक्षित बचाए गए लोगों के स्वास्थ्य जांच और आज रात ही उन्हें उनके घरों तक पहुंचाने की व्यवस्था के निर्देश दिए हैं।

ग्राम पंचायत तानाखार में मतदाता जागरूकता हेतु विविध कार्यक्रम का आयोजन किया गया

विद्यालयों में रंगोली, नुक्कड़ नाटक, रैली के माध्यम से मतदाता जागरूकता का संदेश

कोरबा (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के निर्देशन एवं स्वीप नोडल अधिकारी श्री संबित मिश्रा सीईओ मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत के मार्गदर्शन में लोकसभा निर्वाचन के मतदान हेतु विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है। इसी श्रृंखला में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ग्राम पंचायत तानाखार में विद्यार्थियों व ग्रामीण महिला-पुरूषों के द्वारा रंगोली प्रतियोगिता, पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता, मेहंदी प्रतियोगिता, मतदान हेतु शपथ ग्रहण तथा सुआ नृत्य के माध्यम से शत-प्रतिशत मतदान के माध्यम से लोकतंत्र को मजबूत बनाने का संदेश दिया। जनपद पंचायत पाली के ग्राम पंचायत शिवपुर में ग्रामीण महिला-पुरूषों द्वारा मतदान करने के लिए सामूहिक शपथ ली गई। इसके साथ ही गांव में जागरूकता रैली निकालकर शत-प्रतिशत मतदान करने का संदेश दिया गया। इसी प्रकार स्याहीमुड़ी के शासकीय हाईस्कूल में छात्राओं के द्वारा नुक्कड़ नाटक करके करके शत-प्रतिशत मतदान करने तथा लोकतंत्र को मजबूत करने का संदेश दिया गया।

रंगोली, नुक्कड़ नाटक, रैली के माध्यम से मतदाता जागरूकता का संदेश

तानाखार में मतदाता जागरूकता, विविध कार्यक्रम का आयोजन

कोरबा (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अजीत वसंत के निर्देशन एवं स्वीप नोडल अधिकारी संबित मिश्रा सीईओ मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत के मार्गदर्शन में लोकसभा निर्वाचन के मतदान हेतु विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है। इसी श्रृंखला में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ग्राम पंचायत तानाखार में विद्यार्थियों व ग्रामीण महिला-पुरूषों के द्वारा रंगोली प्रतियोगिता, पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता, मेहंदी प्रतियोगिता, मतदान हेतु शपथ ग्रहण तथा सुआ नृत्य के माध्यम से शत-प्रतिशत मतदान के माध्यम से लोकतंत्र को मजबूत बनाने का संदेश दिया। जनपद पंचायत पाली के ग्राम पंचायत शिवपुर में ग्रामीण महिला-पुरूषों द्वारा मतदान करने के लिए सामूहिक शपथ ली गई। इसके साथ ही गांव में जागरूकता रैली निकालकर शत-प्रतिशत मतदान करने का संदेश दिया गया।

निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न कराना हम सबका दायित्व : प्रेक्षक श्री प्रेमसिंह मीणा

प्रेक्षक एवं कलेक्टर की उपस्थिति में नोडल अधिकारियों की बैठक आयोजित

कोरबा (विश्व परिवार)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा कोरबा जिले के विधानसभाओं के लिए नियुक्त सामान्य प्रेक्षक श्री प्रेमसिंह मीणा (आईएएस) प्रेक्षक श्री कैलाश सुखदेव पगारे (आईएएस) तथा कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत की उपस्थिति में लोकसभा निर्वाचन कोरबा जिला अंतर्गत नोडल अधिकारियों की बैठक कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती सीमा पात्रे तथा अन्य नोडल अधिकारियों ने लोकसभा निर्वाचन अंतर्गत मतदान संपन्न कराने की जा रही तैयारियों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। प्रेक्षक श्री मीणा ने सभी नोडल अधिकारियों को निर्देशित किया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए निष्पक्ष और पारदर्शी रहकर 2ांति पूर्ण चुनाव संपन्न कराना हम सबकी जिम्मेदारी है। प्रेक्षकों ने कोरबा विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत सभी मतदान केंद्रों में महिला अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा मतदान कराने की भागीदारी को बेहतर पहल बताते हुए सभी अधिकारियों को आपस समन्वय स्थापित कर निर्वाचन संपन्न कराने की बात कही। नोडल अधिकारियों की बैठक में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री वसंत ने कोरबा लोकसभा निर्वाचन अंतर्गत विधानसभावार की जा रही तैयारी, प्रशिक्षण, मतदान सामग्री वितरण एवं वापसी तथा विगत चुनाव की स्थिति सहित अन्य जानकारी दी। उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने कोरबा जिला एवं कोरबा लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत आने वाले विधानसभा में मतदान केंद्रों, मतदाताओं, अतिरिक्त मतदान केंद्रों तथा मतदान केंद्रों में आवश्यक बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने के संबंध में जानकारी दी।

संक्षिप्त समाचार

विश्व हिन्दू परिषद् एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा हनुमान जन्मोत्सव एवं शत-प्रतिशत मतदान हेतु कर रहे प्रेरित

बसना (विश्व परिवार)। विश्व हिन्दू परिषद् एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की टोली के द्वारा रामोत्सव मनाने एवं शत-प्रतिशत मतदान के लिए बसना प्रखण्ड के सभी ग्रामों का लगातार बैठक ले रही है । इसी तारतम्य में 19 अप्रैल को ठाकुर राम , सौरभ अग्रवाल एवं बसंत देवता की टोली आमापाली एवं हाड़ापथरा में बैठक लिये और विद्या चरण पटेल, डॉ. भूपेंद्र कुमार शर्मा व सान्दीपनी होता की टोली जीराडबरी एवं तुलाराम व सोनू श्रीवास्तव की टोली गुड़ियारी, पीपलखुंटा, चनाट ढांलम मे बैठक लिये। 20 अप्रैल को बामड़ाडीह,रेमड़ा,रसोड़ा, कुरचुडी, मैदनीपुर में बैठक लिया गया। जिसमें लोगों को शपथ दिलाया गया कि, मैं वोट करूंगा राष्ट्र हित के नाम पर, मैं वोट करूंगा अपने धर्म के रक्षा के नाम पर, मैं वोट करूंगा अपने देश को जोड़ने के नाम पर, मैं वोट करूंगा अपने देश के गौरव को पूरे विश्व में बढ़ाने के नाम पर, मैं वोट करूंगा अपनी संस्कृति के रक्षा के नाम पर,मैं वोट करूंगा भारत माता की जय बोलने के नाम पर। 23 अप्रैल दिन मंगलवार को हनुमान जन्मोत्सव मनाने हेतु टोली के द्वारा बैठक में बताया गया कि, सुबह प्रभात फेरी निकालना है संध्या समय में प्रत्येक घर में रंगोली बनाकर दीपक जलाना है एवं पूरे गाँव के लोग मंदिर में एकत्र होकर हनुमान चालीसा का पाठ पढ़कर और हनुमान जी का आरती गाकर प्रसाद वितरण कर सह भोज के साथ कार्यक्रम को समाप्त करना है। ठीक उसी प्रकार 26 अप्रैल को मतदान के दिन को भी उत्सव के रूप में मनाने हेतु अग्रह किया गया। पहले मतदान फिर जलपान करने के लिए जागरूक किया गया।

आबकारी टीम की छापामार कार्यवाही में एक लाख 34 हजार रूपए की सामग्री जप्त

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (विश्व परिवार)। आबकारी आयुक्त सह सचिव आर संगीता के निर्देश, उपायुक्त आबकारी संभागीय उड़नदस्ता बिलासपुर विजय सेन शर्मा एवं जिला आबकारी अधिकारी सोनल नेताम के मार्गदर्शन में सरसीवां आबकारी टीम द्वारा कार्यवाही किया गया। छापामार कार्यवाही में अनुमानित एक लाख 34 हजार रूपए का सामग्री जप्ति किया गया, जिसमें अनुमानित 22 हजार का 110 लीटर का महुआ शराब, लगभग एक लाख 12 हजार 500 रुपए का 2250 किलो लाहन शामिल है। आबकारी विभाग को सूचना मिली थी ग्राम सलोनीकला सबरिया डेरा, गांव के बाहर एवम महानदी के किनारे भारी मात्रा में अवैध कच्ची महुआ शराब का निर्माण किया जाता है । गांव के बाहर एवम आसपास के क्षेत्रों में इसको विक्रय किया जाता है द्य सूचना की पुष्टि होने पर टीम के साथ बताए गए स्थान पर पहुंचे। स्थल पर 01 सफेद रंग के जरीकीन में भरे 20 लीटर तथा 03 नग सफेद रंग के पारदर्शी पालीथीन प्रत्येक में भरा 30-30 लीटर कुल जब्त मात्रा 110 लीटर कच्ची महुआ शराब तथा महुआ शराब बनाने के लिए महुआ लाहन जो की 45 नग जूट के बोरे के अंदर पालीथीन प्रत्येक में भरा 50-50 किलोग्राम कुल मात्रा 2250 किलोग्राम को जब्त किया गया द्य कच्ची महुआ शराब को आबकारी टीम द्वारा जप्त किया गया और विधिवत रूप से महुआ लाहन का नष्टीकरण किया गया है। अज्ञात आरोपी के विरुद्ध छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम धारा 34(1)(क)(च)34(2) का , प्रकरण कायम कर विवेचना में लिया गया है।आरोपियों की पतासाजी की जा रही है द्य उक्त कार्यवाही में आबकारी उपनिरीक्षक विपिन पाठक , आबकारी आरक्षक धनेश्वर राव मगर एवम सुरक्षा गार्ड लोचन साहू तथा ड्राइवर रामदुलार पटेल का विशेष योगदान रहा द्य उल्लेखनीय है कि तीन चार माह बाद सलोनीकला सबरिया डेरा में आबकारी की दूसरी छापामार कार्यवाही है।

सामान्य प्रेक्षक अग्रवाल ने 20 मतदान केन्द्रों का किया निरीक्षण

धमतरी (विश्व परिवार)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा क्षेत्र महासमुंद के विधानसभा धमतरी और कुरूद के लिए नियुक्त सामान्य प्रेक्षक अनिल अग्रवाल ने आज 20 मतदान केन्द्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इनमें भेण्डरी, करेली बड़ी, कुण्डेल, मेघा, गाड़ाडीह आर, उमरदा, कुरूद, मौरीखुर्द के मतदान केन्द्र शामिल हैं। इस दौरान उन्होंने मतदान केन्द्रों में आवश्यक व्यवस्था बिजली, पानी, शौचालय, रैम्प, दिव्यांगजनों के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री तथा अन्य व्यवस्थाओं की जानकारी ली। श्री अग्रवाल ने मतदान केन्द्र बड़ी करेली तक पहुंचने हेतु मार्ग की आवश्यक मरम्मत मतदान दिवस के पूर्व करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। इसके साथ ही मतदान केन्द्र के समीप बने गड्ढों को समतल कराने के निर्देश भी दिये।

संपादकीय

सावधानी बरतनी चाहिए

इस बार का चुनाव बिल्कुल फीका है। एक तरफ नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा हिन्दू, मुसलमान, कांग्रेस की नाकामियों को चुनावी मुद्दा बनाए हुए है वहीं चार दशक में बढ़ी सबसे ज्यादा बेरोजगारी, किसान को फसल के उचित दाम न मिलना, बेइंतहा महंगाई और तमाम उन वादों को पूरा न करना, जो मोदी जी ने 2014 व 2019 में किए थे-ऐसे मुद्दे हैं जिन पर भाजपा का नेतृत्व चुनावी सभाओं में कोई बात ही नहीं कर रहा। 'सबका साथ सबका विकास' नारे के बावजूद समाज में जो खाई पैदा हुई है, वो चिंताजनक है। रोचक बात यह है कि 2014 के लोक सभा चुनाव को मोदी जी ने गुजरात मॉडल, भ्रष्टाचारमुक्त शासन और विकास के मुद्दे पर लड़ा था। पता नहीं 2019 में और इस बार क्यों वे इनमें से किसी भी मुद्दे पर बात नहीं कर रहे हैं। इसलिए किसान, मजदूर, करोड़ों बेरोजगार युवाओं, छोटे व्यापारियों यहां तक कि उद्योगपतियों को भी उनके भाषणों में रुचि खत्म हो गई है। उन्हें लगता है कि मोदी जी ने उन्हें वादे के अनुसार कुछ भी नहीं दिया। इसलिए यह विशाल मतदाता वर्ग भाजपा सरकार के विरोध में है। हालांकि अपना विरोध खुल कर प्रकट नहीं कर रहा। हालांकि यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि प्रति व्यक्ति हर महीने 5 किलो अनाज मुफ्त देने का मोदी जी का फार्मूला कारगर रहा है। जिन्हें अनाज मिल रहा है, वे कहते हैं कि इससे पहले कभी किसी सरकार ने उन्हें ऐसा कुछ नहीं दिया। इसलिए वे मोदी जी के समर्थन में हैं। पर इस मुद्दे पर बुद्धिजीवियों और अर्थशास्त्रियों की राय भिन्न है। वे कहते हैं कि अगर मोदी जी ने अपने वादे के अनुसार हर साल 2 करोड़ युवाओं को रोजगार दिया होता तो अब तक 20 करोड़ युवाओं को रोजगार मिल जाता। तब हर युवा अपने परिवार के कम से कम पांच सदस्यों का भरण-पोषण कर लेता। इस तरह भारत के 100 करोड़ लोग सम्मान की जिंदगी जी रहे होते जबकि आज 80 करोड़ लोग 5 किलो राशन के लिए भीख का कटोरा लेकर जी रहे हैं। दूसरी तरफ, वे लोग हैं जो मोदी जी के अंधभक्त हैं, और हर हाल में मोदी सरकार को फिर से लाना चाहते हैं। मोदी जी के 400 पार के नारे से आत्ममुग्ध हैं। मोदी सरकार की सब नाकामियों को वे कांग्रेस शासन के मत्थे मढ़कर पिंड छुड़ा लेते हैं क्योंकि इन प्रश्नों का कोई उत्तर उनके पास नहीं है।

कांग्रेस का सिमटता प्रभाव और खतरनाक सोच

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

पिछले कुछ सालों से राहुल गांधी के बयानों को भी इसी गहरी नजर से देखना चाहिए। वह अमरीका के लोगों को बताते रहे हैं कि भारत को पाकिस्तान समर्थक इस्लामी आतंकवादियों से इतना डर नहीं है जितना राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से कर्नाटक विधानसभा में पिछले दिनों कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डीके सुरेश ने कहा कि केंद्र सरकार दक्षिण भारत के राज्यों को कम पैसा मुहैया करवाती है। इससे हो सकता है कि हम दक्षिण के राज्य भविष्य में भारत से अलग होने की सोचें। वैसे तो पूछा जा सकता है कि सुरेश बाबू को दक्षिण के राज्यों का प्रतिनिधि किसने बनाया? तमिलनाडु में कांग्रेस कामराज के बाद से लुप्त प्रजाति में शामिल हो चुकी है। डीएमके चुनाव के मौसम में उसे कन्धे पर इस लहजे में उठा लेती है जैसे नई पीढ़ी के ज्ञान के लिए ऐतिहासिक चीजों का प्रदर्शन किया जाता है। लेकिन सुरेश बाबू ने जब से यह रहस्योद्घाटन किया है तब से कम से कम प्रदेश में कांग्रेस के लोगों में यह भय बैठ गया है कि कहीं पार्टी विभाजन को लेकर किसी एजेंडा पर तो नहीं चल रही? पिछले दिनों कर्नाटक में कांग्रेस की एक विशाल जनसभा हो रही थी। उसमें कांग्रेस में सोनिया गान्धी परिवार का प्रतिनिधित्व करने वाले पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे भी मंचासीन थे। कांग्रेस के एक विधायक लक्ष्मण संवादी भी मंच पर थे। वे भाषण दे रहे थे। उनके मन में इच्छा हो रही थी कि वे मंच पर से 'भारत माता की जय' का नारा लगाएं। लेकिन डर रहे थे कि कहीं इस नारे से पार्टी अध्यक्ष बुरा न मान जाएं। कुछ देर तक लक्ष्मण के मन में डर और श्रद्धा के बीच द्वन्द्व चलता रहा होगा। लेकिन अन्त में राष्ट्रीयता की जीत हुई। उन्होंने मंच पर से ही मल्लिकार्जुन खडगे से पूछा कि यदि आप बुरा न मनाएं तो मैं 'भारत माता की जय' का एक नारा लगा लूं। आखिर क्या कारण है कि कांग्रेस के कार्यकर्ता जानते हैं कि अब पार्टी में 'भारत माता की जय' या 'जय श्री राम' का जयघोष करना खतरे से खाली नहीं है। इसका अर्थ स्पष्ट है कि कांग्रेस का आम कार्यकर्ता तो देश को अखंड रखने के लिए या फिर अखंड भारत के लिए लालायित है, लेकिन उसका नेतृत्व अपने संकुचित राजनीतिक हितों के लिए भारत को तोडने की हद तक भी जा सकता है। महात्मा गांधी से लेकर सोनिया परिवार तक की यह यात्रा सचमुच चौंकाती है। यह यात्रा रघुपति राघव राजा राम से शुरू हुई थी और राम मंदिर के निर्माण के विरोध तक ही नहीं, बल्कि राम के अस्तित्व को ही नकारने तक पहुंच गई है। यही कारण है कि पार्टी प्रधान की हाजिरी में कांग्रेस का विधायक 'भारत माता की जय' का नारा लगाते हुए भी डरता है कि कहीं पार्टी एक्शन न ले ले। दरअसल पिछले कुछ अरसे से भाजपा ने जनसंघ के समय से चले आ रहे अपने अखंड भारत के संकल्प को ज्यादा जोर से कहना शुरू कर दिया है। तब भी शायद कोई इसको ज्यादा तवज्जो न देता यदि भाजपा ने भारतीय संविधान में से अनुच्छेद 370 को न हटा दिया होता। इससे लोगों में यह विश्वास जगने लगा है कि पार्टी घोषणा पत्र/संकल्प पत्र में जो लिखती है, उसे पूरा करती है। चाहे उसमें कितना ही समय क्यों न लगे। इसके पहले चरण में तो पाकिस्तान के कब्जे से वे इलाके मुक्त करवाना है जो उसने 1947 में कश्मीर पर हमला करके भारत से छीन लिए थे। इसके संकेत प्रधानमंत्री मोदी अनेक बार दे भी चुके हैं। इससे पाकिस्तान का चिंतित होना स्वाभाविक ही है। लेकिन लगता है पाकिस्तान से ज्यादा चिंता इससे कांग्रेस के नेतृत्व को हो रही है। उस चिंता को व्यक्त करने का तरीका सामान्य नहीं है। उसका कहना है कि भारतीय जनता पार्टी देश को विभाजित करना चाहती है। आरोप इस प्रकार का है कि आम भारतीय को यह हज्म नहीं होता। सोनिया गांधी परिवार ने ऐसा आरोप मुस्लिम लीग या सीपीएम पर लगाया होता तो शायद भारत के लोग इस पर ज्यादा आश्चर्यचकित न होते। लेकिन यह परिवार ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि इन दोनों के साथ केरल में परिवार का राजनीतिक समझौता है। इसलिए उसने यह आरोप भाजपा पर लगाना आसान मान लिया। लेकिन भाजपा आखिर विभाजन करवाना कैसे चाहती है? परिवार का कहना है कि भाजपा नार्थ-साऊथ डिवाइड के रास्ते पर चल रही है। लेकिन लोग आखिर इसके लिए प्रमाण की मांग करेंगे ही। वैसे यह जरूरी नहीं है कि राहुल गांधी जो भी कहते रहते हैं, उसके लिए कुछ प्रमाण भी उनके पास होते ही हों। वे स्वयं को इस प्रकार के सभी बंधनों से आजाद मानते हैं। सुरेश बाबू का तर्क यदि गहराई से देखा जाए तो कुछ बातें स्पष्ट हो रही हैं। कांग्रेस का कहना है कि 1. उत्तर भारत, पश्चिमी भारत और कुछ सीमा तक पूर्वी भारत के लोग भारतीय जनता पार्टी को वोट देते हैं, इसलिए केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनती है। 2. दक्षिणी प्रान्तों के लोग भारतीय जनता पार्टी को वोट नहीं देते, इसलिए भारतीय जनता पार्टी इन दक्षिणी क्षेत्रों से नाराज है। 3. भारतीय जनता पार्टी अपनी यह नाराजगी इन दक्षिणी राज्यों से बदला लेकर निकालती है। बदला लेने का तरीका यही अपनाती है कि इन राज्यों को कम पैसा आवंटित किया जाता है। 4. कांग्रेस के वरिष्ठ मंत्री डीके सुरेश इसका एक ही हल बताते हैं कि फिर दक्षिण के राज्यों को देश से अलग होना पड़ेगा। सुरेश बाबू के तर्कों को निश्चय ही देखना पड़ेगा। सुरेश बाबू कर्नाटक से ताल्लुक रखते हैं। कर्नाटक में मुख्य रूप से दो ही राजनीतिक दल हैं। भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस। वहां एक बार भाजपा और दूसरी बार कांग्रेस सत्ता में आती है। इससे कोई भी अक्लमंद आदमी यह तो नहीं कहेगा कि कर्नाटक के लोग भाजपा को वोट नहीं देते। दूसरा उदाहरण तेलंगाना का ले सकते हैं। तेलांगना में मुख्य रूप से तीन राजनीतिक दल हैं। कांग्रेस, भारत राष्ट्र समिति और भारतीय जनता पार्टी। इन तीनों दलों को कुछ अंतर से सम्मानजनक वोट मिलते हैं। इसलिए तीनों राजनीतिक दलों की स्थिति राज्य में बराबर है। शेष दक्षिण के तीन राज्य हैं आंध्र प्रदेश, केरल और तमिलनाडु। तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में कांग्रेस और भाजपा की स्थिति लगभग बराबर ही है। इन दोनों की स्थिति नगण्य है। इसका अर्थ हुआ कि दक्षिण के राज्यों में भाजपा और कांग्रेस की स्थिति लगभग बराबर ही है। फिर सुरेश बाबू किस हैसियत से मानते हैं कि कांग्रेस को सभी दक्षिणी राज्यों के प्रतिनिधि के तौर पर बोलने का अधिकार है। सुरेश बाबू एक बात शायद भूल रहे हैं कि पिछले दिनों जब राज्यसभा के चुनाव में कांग्रेस का एक प्रत्याशी जीता था, तो कर्नाटक विधानसभा के भीतर ही उसके समर्थकों ने खुशी में पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाए थे। तब कांग्रेस के ही कुछ बड़े लोगों ने उसकी निंदा करने की बजाय यह तर्क दिया था कि पाकिस्तान हमारा मित्र देश है, उसकी बात करना गलत कैसे हो गया? शायद उसी के कारण कांग्रेस के आम कार्यकर्ता के मन में कहीं न कहीं डर बैठ गया है कि भारत माता की जय से कांग्रेस नेतृत्व चिढ़ता है।

विचार

फैसले किसी को डराने या नीचा दिखाने के लिए नहीं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि उनके पास बड़ी योजनाएं हैं, किसी को डरने की जरूरत नहीं है। उनके फैसले किसी को डराने या नीचा दिखाने के लिए नहीं होते। वे देश के विकास के लिए बने हैं, और 10 साल का उनका काम सिर्फ ट्रेलर है, 2047 के लिए अभी बहुत काम बाकी हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को एक न्यूज एजेंसी को दिए विस्तृत साक्षात्कार में तमाम जिज्ञासाओं और प्रश्नों के खुलकर जवाब दिए। बेशक, चुनावी वेला उनके साक्षात्कार से काफी बातें साफ हुई हैं, और मंतव्यों को सही परिप्रेक्ष्य में समझने में मदद मिल सकती है। चुनावी बॉन्ड से लेकर मोदी की गारंटी कहे जाने के पीछे के मंतव्य का भी उन्होंने खुलासा किया। राम मन्दिर को लेकर होती रही राजनीति में अपनी पार्टी और विपक्षी पार्टियों के बीच आरोप-प्रत्यारोपों पर भी उन्होंने तमाम बातें स्पष्ट कीं। दरअसल, यह चुनाव ऐसा है जहां किसी प्रकार की लहर जैसी कोई बात नहीं है, और मुकाबला सीट दर सीट होना तय है। चूंकि भाजपा गठबंधन एनडीए दस साल से सत्ता में है, और चुनाव में कोई लहर न रहने से एनडीए सरकार को सत्ताजनित आक्रोश का सामना रहेगा। ऐसे में गफलत फैलाने का मंसूबा सिरे चढ़ाना किसी के लिए भी आसान रहता है। मोदी सरकार ने शुरू से ही फैसले लेने वाली सरकार की छवि बना ली थी। नोटबंदी जैसे फैसले एकाएक लिए गए और भी तमाम फैसलों की लिस्ट गिनाई जा सकती है, जिनसे लगता है कि उन्हें एकाएक लिया गया। जिस प्रकार कांग्रेसविहीन अवधारणा पेश की गई उससे भी लगने लगा कि सरकार किसी भी फैसले में विपक्ष को विश्वास में लेने में विश्वास नहीं करती। न ही किसी मंच पर जनमानस को किसी भी फैसले के प्रभावों के मद्देनजर तैयार करने की ही कोशिश सरकार की ओर दिखलाई पड़ी। कई बार लगा जैसे सरकार पारदर्शिता से काम नहीं कर रही और एकतंत्रीय व्यवस्था जैसे हालात हुए जा रहे हैं। चुनावी बॉन्ड का अधिकांश हिस्सा सत्ताधारी पार्टी को मिलने से भी एक प्रकार के अविश्वास की स्थिति नजर आने लगी। अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री मोदी ऐसे तमाम सवालों के जवाब को लेकर विस्तार से अपनी बात रखी। महसूस कराया कि काफी कुछ ऐसा है जिसका वस्तुस्थिति से कुछ लेना देना नहीं है। बेशक, प्रधानमंत्री का साक्षात्कार गफलत को परे झटकेगा।

लोकतंत्र के लिए अहम

इलेक्ट्रॉल बॉन्ड योजना शुरू से विवादास्पद थी। जो अनुभव रहा, उससे इसके खिलाफ आरंभ ही कही गई बातें लगातार ठोस साबित होती गईं। इनके बीच यह तर्क महत्त्वपूर्ण था कि असीमित और गुप्त राजनीतिक चंदा स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव के तकाजे के खिलाफ है। इलेक्ट्रॉल बॉन्ड योजना को रद्द कर सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में बड़ा योगदान किया है। यह योजना शुरू से विवादास्पद थी। जो अनुभव रहा, उससे इसके खिलाफ आरंभ ही कही गई बातें लगातार ठोस साबित होती गईं। इनके बीच दो तर्क महत्त्वपूर्ण थे- पहला यह कि असीमित और गुप्त राजनीतिक चंदा स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव के तकाजे के खिलाफ है। दूसरी दलील यह थी कि इलेक्ट्रॉल बॉन्ड योजना में शामिल प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (ए) के तहत मिले सूचना के अधिकार का उल्लंघन हैं। इन दोनों ही तर्कों को अब सुप्रीम कोर्ट ने वाजिब ठहराया है। प्रधान न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि गुप्त चंदे का प्रावधान सूचना के अधिकार के खिलाफ है। इस प्रावधान के तहत एक और आपत्तिजनक बात यह रही है कि चंदा देने वाली कंपनियों की पहचान आम जन से तो छिपी रहती है, लेकिन सरकार को यह सब मालूम रहता है कि कौन किसको कितना चंदा दे रहा है। इससे इस आरोप को बल मिला कि कंपनियों के लिए विपक्षी दलों को चंदा देना जोखिम भरा हो गया है। तमाम उपलब्ध आंकड़ों से इस बात की लगातार पुष्टि हुई है कि इलेक्ट्रॉल बॉन्ड्स के तहत दिए गए चंदे का अधिकांश हिस्सा सत्ताधारी दल को गया है। कोर्ट ने उचित ही यह कहा कि राजनीति चंदे के जरिए दाताओं की सत्ता के हलकों तक पहुंच बनती है। इस पहुंच से नीति निर्माण के प्रभावित होने का अंदेशा पैदा हो जाता है। सार्वजनिक दायरे में ये धारणा भी गहराई है कि वर्तमान सरकार और कुछ कॉरपोरेट घरानों के बीच ऐसे अंत:संबंध बन गए हैं, जिनसे देश की महत्त्वपूर्ण नीतियां प्रभावित हो रही हैं।

सॉफ्ट हिंदुत्व की ओर बढ़ती कांग्रेस पार्टी

डा. देवेंद्र गुप्ता

हिमाचल के राजनीतिक परिदृश्य और कांग्रेस के नेताओं के बयानों को देख कर अब यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि कांग्रेस अब हिंदुत्व के मुद्दे पर नरमी दिखाती अग्रसर हो रही है कांग्रेस को सबसे बड़ी और पुरानी राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल था। सबसे बड़ी होने का रुतबा अब भारतीय जनता पार्टी ने कब का कांग्रेस से छीन लिया है। उसको अब पुरानी पार्टी ही बन कर संतोष करना पड़ रहा है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो कांग्रेस ने धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे पर बड़ी गहनता के साथ देश पर शासन करते हुए राजनीतिक दुर्घटना को अंजाम दिया। बहुसंख्यक हिंदुओं को सहिष्णुता का तो हमेशा पाठ पढ़ाया गया, परंतु अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को अधिमान दिया गया। हिंदू मतदाताओं ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, फिर भारतीय जनसंघ, जनता पार्टी और अंततोगत्वा भारतीय जनता पार्टी में शरण ली और इस तरह भाजपा का अभ्युदय हिंदू धर्म की अस्मिता को लेकर और अल्पसंख्यक तुष्टिकरण व आतंकवाद के विरोध में हुआ। अटल-आडवानी की युति ने भारतीय जनता पार्टी के रथ को हांकते हुए कई राज्यों में और केंद्र में सरकार बनाने में सफलता प्राप्त की। कांग्रेस भी इसी बीच इन राजनीतिक झंझावातों को झेलते हुए भाजपा के बढ़ते कदमों को रोकने में सफल होती नजर आई और सरदार मनमोहन सिंह के नेतृत्व में दो बार केंद्र में सरकार बनाने में सफल हुई। 2014 के चुनावों में बड़े स्तर पर हुए घपले, भ्रष्टाचार तथा राम मंदिर निर्माण का मुद्दा इतना हावी रहा कि कांग्रेस को केंद्र में और राज्यों में जबरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा और भाजपा केंद्र में सत्ता हथिया पाने में सफल रही। अब जबकि 2024 के लोकसभा चुनावों की बिसात बिछ चुकी है तो कांग्रेस के कर्णधारों को भाजपा की राजनीति से यह बात साफसमझ में आ गई है कि भारत जैसे हिंदू बहुल वोटरों के देश में अब उनकी जनभावनाओं को नहीं दबाया जा सकता है। इसीलिए कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व हिंदू हितैषी दिखने/दिखाने के लिए देश के मंदिरों की शरण में जाने लगे हैं और अपने को जनेऊधारी बताने लगे हैं। यहां तक कि राहुल की दोनों पद्यात्राओं में मंदिरों में आस्था, मठाधीशों और शंकराचार्यों से आशीर्वाद प्राप्त करना प्रमुखता के साथ एजेंडा में रहे। हिमाचल में भी कांग्रेस का शीर्ष राजनीतिक वीरभद्र परिवार अपने को सनातनी और 'हिंदू होने पर गर्व है' कहलाने में नहीं हिचकिचाया है। छह बार मुख्यमंत्री रहे वीरभद्र सिंह के बेटे और कांग्रेस सरकार में कैबिनेट मंत्री विक्रमादित्य ने 22 जनवरी को राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शामिल होने का बाकायदा ऐलान कर दिया था। केन्द्रीय नेतृत्व की लाइन के विपरीत प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और सांसद प्रतिभा सिंह ने भी आस्था जताई। सरकार के मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों ने भी यही दोहराया कि वो भी हिंदू हैं, पर वो राम मंदिर दर्शनों को बाद में जाएंगे। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिमाचल की राजनीति के शिखर पुरुष वीरभद्र सिंह एक अच्छे प्रशासक ही नहीं बल्कि सुलझे हुए चुनावी रणनीतिकार भी थे। पिछली सदी के आठवें दशक में देश-प्रदेशों में भारतीय जनता पार्टी की आहट और उपस्थिति दर्ज होने लगी थी। उस समय हिमाचल के मुख्यमंत्री के तौर पर वीरभद्र सिंह प्रदेश की राजनीति में काबिज हो गए थे। वीरभद्र का शासन समय और भाजपा का आरोहण काल एक ही है। वो धर्म को व्यक्ति की आस्था का विषय मानते थे। धर्म में उनकी गहरी आस्था थी। मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य, विशेषकर धर्म पीठों और काष्ठ कुणी शैली के मंदिरों के रखरखाव में विशेष ध्यान देते थे। उनके राज में मंदिरों को सरकारी अधिनियम के तहत अधिगृहित करते हुए प्राप्त आय को जनकल्याण में लगाया गया। प्रदेश में 2007 को धर्मांतरण पर अधिनियम लाया गया और बूढ़े, गरीब, असहाय माता-पिता को भरण पोषण का कानून पारित हुआ। ये कल्याणकारी कदम ऐसे थे जिन्होंने प्रदेश के हिंदू बहुल वोटरों को कांग्रेस से जोड़े रखा था। परंतु वीरभद्र आरएसएस की हिंदुत्व वाली विचारधारा को सांप्रदायिकता फैलाने वाली व नफरत पैदा करने वाली मानते थे। समाज में ऐसे विघटनकारी संस्थान को एक समय में बैन भी किया था। इसके बावजूद वीरभद्र ने चार-पांच दशक पहले अपने प्रदेश में समझ लिया था कि बहुसंख्यकों की अनदेखी भारत जैसे देश के लिए और राजनीतिक तौर पर कांग्रेस के लिए अहितकारी होगी। हिमाचल में हिंदू बहुल आबादी होने के नाते हिंदू वोटरों ने सदैव उनका साथ दिया। जब राम मंदिर के निर्माण की बात आई तो अयोध्या को वह प्रति वर्ष नियम के साथ दान भेजते रहे। यही कारण है कि राम मंदिर निर्माण सभा ने वीरभद्र परिवार को न्योता भेजा और उनके बेटे, कांग्रेस के युवा आइकॉन विक्रमादित्य ने अपने पिता का मान रखते हुए और स्वयं राम भगवान में आस्था जताते हुए अयोध्या का निमंत्रण स्वीकार किया। कांग्रेस जैसा इतना बड़ा राष्ट्रीय दल भाजपा से मुकाबिल होने के लिए अपने से छोटे क्षेत्रीय दलों के साथ आज गठबंधन करने को मजबूर हुआ जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में हिंदू धर्म को मानने वाले कुल जनसंख्या का 95.17 फीसदी हैं। जिनमें मुसलमान कुल आबादी का 2.18 फीसदी हैं और ईसाई कुल आबादी का 0.18 फीसदी हैं। प्रदेश के 12 में से 11 जिलों में हिंदू बहुसंख्यक आबादी है। स्पष्ट है कि मुसलमान और ईसाई आबादी की संख्या इतनी भी नहीं है कि वे चुनावों के परिणामों को प्रभावित कर सकें। इनमें भी 56 प्रतिशत उच्च जाति के हैं जिनमें राजपूत 28 और ब्राह्मण 20 फीसदी हैं। वैश्य-क्षत्रिय 8 फीसदी बैठते हैं। शेष निचली जाति के हिंदू आते हैं जिनको सभी पार्टियां लुभाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ती हैं। हिमाचल के राजनीतिक परिदृश्य और कांग्रेस के नेताओं के बयानों को देख कर अब यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि कांग्रेस अब हिंदुत्व के मुद्दे पर नरमी दिखाती अग्रसर हो रही है।

पर्यटकों को लुभाती वैश्विक धरोहरें स्थल

अनुज आचार्य

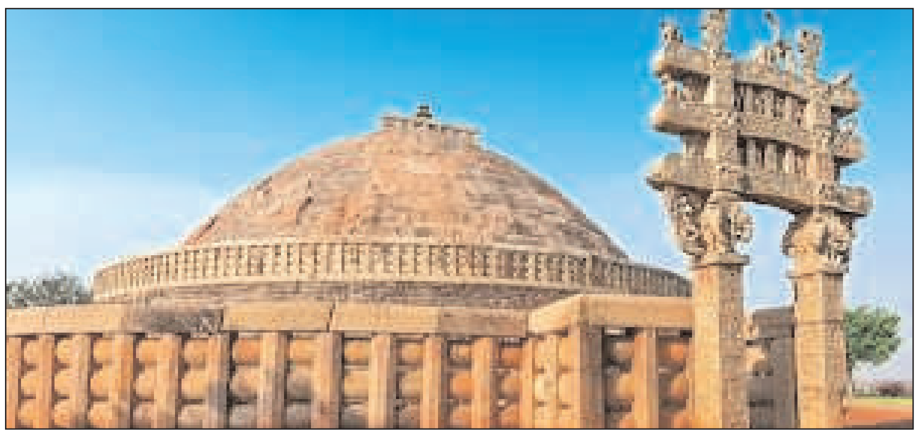

इन धरोहर स्थलों के निकट स्थानीय पकवानों को परोसने वाले स्टाल्स लगाकर पर्यटकों को क्षेत्र विशेष के खानपान से परिचित करवाने का प्रयास होना चाहिए। ऐसे महत्वपूर्ण धरोहर स्थलों के निकट पार्किंग स्टैंड बनाए जाने चाहिए और पर्यटकों को लूटने-झांसा देने वाले लोगों पर कड़ी नजर रखी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त सुरक्षा के पर्याप्त प्रबंध हों विश्व धरोहर दिवस अथवा विश्व विरासत दिवस प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य पूरे विश्व में मानव सभ्यता से जुड़े ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करना है। हमारी प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत दोनों ही जीवन और प्रेरणा के अपूरणीय स्रोत हैं। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन अर्थात यूनेस्को सांस्कृतिक या प्राकृतिक विरासत के लिए उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के विश्व धरोहर स्थलों को नामित करता है, जिन्हें उन देशों द्वारा नामांकित किया गया होता है और जिन्होंने 1972 में स्थापित यूनेस्को विश्व विरासत सम्मेलन में हस्ताक्षर किए थे। धरोहरों में शामिल होने के लिए कुछ मापदंड तय किए गए हैं जिनमें सांस्कृतिक विरासत के अंतर्गत स्मारक (जैसे वास्तुशिल्प कार्य, स्मारकीय मूर्तियां या शिलालेख), इमारतों के समूह और स्थल (पुरातात्विक स्थलों सहित) शामिल हैं। इसी तरह प्राकृतिक विशेषताएं (भौतिक और जैविक संरचनाओं से युक्त), भूवैज्ञानिक और भौगोलिक संरचनाएं (जानवरों और पौधों की संकटग्रस्त प्रजातियों के आवास सहित) और प्राकृतिक स्थल जो विज्ञान, संरक्षण या प्राकृतिक सौंदर्य के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें प्राकृतिक रूप में परिभाषित किया गया है, आते हैं। भारत ने 14 नवंबर 1977 को इस सम्मेलन में शामिल होना स्वीकार किया था, जिससे भारत की प्राचीन धरोहरें और साइटें सूची में शामिल होने के योग्य हो गईं। वर्तमान में 851 विश्व धरोहर स्थल हैं, जो 142 देशों में स्थित हैं। इनमें से 660 सांस्कृतिक हैं और 25 मिलीजुली सम्पदाएं हैं। अब तक (अक्टूबर 2023 तक) पूरी दुनिया में लगभग 1199 स्थलों को विश्व विरासत स्थल घोषित किया जा चुका है जिसमें 933 सांस्कृतिक, 227 प्राकृतिक, 39 मिश्रित (सांस्कृतिक और प्राकृतिक दोनों) स्थल हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय का हित भी इसी में निहित होता है कि वे आने वाली पीढियों के लिए और मानवता के हित के लिए इनका संरक्षण करें। इसलिए पूरे विश्व समुदाय को इनके संरक्षण की जिम्मेदारी भी लेनी होती है। इटली में सबसे अधिक 58 विरासत स्थल हैं। इसके बाद चीन में 56 और जर्मनी में 51 हैं। भारत 42 विरासत स्थलों के साथ देशों की सूची में पांचवें स्थान पर है। कम विरासत स्थलों वाले स्थान अधिकतर द्वीप राष्ट्र हैं जिनके एक या दो स्थल हैं, जैसे तुवालु और नाउरू। इस बार विश्व विरासत दिवस 2024 की थीम 'विविधता की खोज करें और अनुभव करें' है। यह एक अनुस्मारक है कि हमारा समृद्ध इतिहास दुनिया भर में विभिन्न संस्कृतियों की सुंदरता को बढ़ाता है। विश्व धरोहर में चयनित होने के लिए उनके मेजबान देश द्वारा नामांकित किया जाता है और अंतरराष्ट्रीय समिति द्वारा एक असाधारण मापदंड प्रणाली द्वारा निर्धारित किया जाता है, जो भौगोलिक और ऐतिहासिक रूप से पहचान योग्य हो और जिसका एक विशेष सांस्कृतिक या भौतिक महत्व हो। भारत में 42 विश्व धरोहर स्थल हैं। इनमें से 34 सांस्कृतिक हैं, सात प्राकृतिक हैं, और एक, कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान, मिश्रित प्रकार का है। भारत में शानदार ऐतिहासिक स्मारक हैं जो हमारी संस्कृति और विविधता को परिभाषित करते हैं। यह दिन मानव विरासत, विविधता और दुनिया में निर्मित स्मारकों और विरासत स्थलों को संरक्षित करने के बारे में है। साथ ही हमारी प्राचीन धरोहरों की सुरक्षा और संरक्षण तथा इस ओर ध्यान आकर्षित करने के प्रयासों की आवश्यकता के लिए भी। इस दिन विश्व भर के नागरिकों का ध्यान आकृष्ट किया जाता है। हम सभी जानते हैं कि प्राचीन इमारतें और स्मारक हमारे और दुनिया के लिए एक संपत्ति हैं। इसलिए विश्व विरासत दिवस दुनिया भर के समुदायों का एक सामूहिक प्रयास है। यह दिन सांस्कृतिक विरासत को कायम रखता है और लोगों को इसकी संवेदनशीलता के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। यह एक ऐसा अवसर भी है जब हम लोगों को बताते हैं कि हमारी ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहरों को आने वाली पीढ़ियों के लिए बचाए रखने के लिए कितनी कोशिशें हो रही हैं। साथ ही यह दिन यह भी बताता है कि हमारी इन धरोहरों को और कितने रखरखाव की जरूरत है। ऐतिहासिक स्मारक भारत के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये स्मारक देश के प्राचीन शासकों और उनके राजवंशों की जानकारी प्रदान करते हैं। इन ऐतिहासिक स्मारकों पर विशेष प्रकार के चिन्ह और नक्काशी की गई है, जैसे आगरा का ताजमहल अथवा प्राचीन शिल्पकला के दर्शन करवाते महत्वपूर्ण मंदिर। भारत संस्कृति, विरासत संरचनाओं, अभयारण्यों, चौकियों और शाही आवासों से समृद्ध राष्ट्र है। ऐतिहासिक स्थल महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और कलात्मक मूल्य रखते हैं, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं। ऐतिहासिक स्थल न केवल किसी शहर-गांव के आकर्षण में वृद्धि करते हैं, अपितु देसी और विदेशी पर्यटकों को भी अपने यहां आने के लिए आकर्षित करते हैं।जिससे वहां पर्यटक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है और स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है। भारत के परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक है कि भारत की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का समुचित रूप में संरक्षण हो, वहां साफ-सफाई सहित साफ-सुथरे शौचालयों की व्यवस्था की जाए। भिखारियों एवं अवांछित लोगों को जो पर्यटकों को घुमाने एवं फोटोग्राफी करने के लिए पीछे पड़ते हैं, से दूर रखा जाए। इसके अतिरिक्त इन धरोहर स्थलों के निकट स्थानीय पकवानों को परोसने वाले स्टाल्स लगाकर पर्यटकों को क्षेत्र विशेष के खानपान से परिचित करवाने का प्रयास होना चाहिए। ऐसे महत्वपूर्ण धरोहर स्थलों के निकट पार्किंग स्टैंड बनाए जाने चाहिए और पर्यटकों को लूटने-झांसा देने वाले लोगों पर कड़ी नजर रखी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त सुरक्षा के पर्याप्त प्रबंध हों, ताकि पर्यटक इन धरोहरों का निश्चिंत होकर अवलोकन कर सकें।

भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव पर गूंजे जियो और जीने दो के नारे, निकाली गई श्रीजी की भव्य शोभायात्रा

मानव जीवन को सफल बनाने के लिये महावीर स्वामी द्वारा बताये सत्य अहिंसा आदि सिद्धांतों का करें अनुशरण: आचार्य श्री सुलभसागर जी महाराज

तालबेहट/ललितपुर (विश्व परिवार)। सिद्ध क्षेत्र पावागिरि सहित कस्बे के दोनों जैन मंदिरों में जैनधर्म के 24 वें तीर्थंकर वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी का 2623 वां जन्म कल्याणक महोत्सव प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें सुबह मंदिर में भगवान महावीर स्वामी का अभिषेक शांतिधारा पूजन विधान हुआ। तत्पश्चात पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से विमानोत्सव कार्यक्रम में भगवान महावीर स्वामी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। जिसमें तैलीय चित्रों की झांकी, डी जे बैंड की धार्मिक धुनों पर नृत्य करते युवा, श्रीजी को विमान में लेकर श्रद्धालु, बग्गियों में धर्मध्वजा लेकर धर्मश्रेष्ठी, सत्य अहिंसा के नारे लगाते हुए पुरुष वर्ग एवं मंगल गीत गाते हुए महिलाएं चल रही थी। नगर अध्यक्ष पुनीत सिंह परिहार, व्यापार मण्डल के अध्यक्ष विजय किशोर सोनी, पूर्व ब्लॉक प्रमुख राजेश सोनी सहित जैन धर्माबिलंबियों ने अपने द्वार को रंगोली से सजाकर श्रीजी की मंगल आरती उतारी एवं शोभायात्रा का स्वागत किया, जो बड़ा मंदिर से प्रारंभ हो कर मर्दन सिंह स्टेच्यू से होते हुए रामलीला मैदान से नया मंदिर से बर्फ फेक्ट्री के रास्ते सब्जी मंडी से होते हुए वापस बड़ा मंदिर पहुंची। जहाँ श्री जी के कलशाभिषेक शांतिधारा फूलमाल की क्रियायें संपन्न की गयी। वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर में धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य सुलभ सागर जी महाराज ने कहा भगवान महावीर स्वामी के द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, अस्तेय, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह जैसे सिद्धांतों का अनुशरण करें एवं उनके बताये जियो और जीने दो के मार्ग पर चलें तो निश्चित ही मानव जीवन का कल्याण होगा। क्षुल्लक श्रीफल सागर महाराज ने भगवान महावीर के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला एवं उनके आदर्शों को प्रासंगिक बताया। अहिंसा सेवा संगठन के संस्थापक विशाल जैन पवा ने कहा भगवान महावीर स्वामी का जन्म 599 ईसा पूर्व वैशाली के कुण्डग्राम में राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के यहाँ चैत्र शुक्ल तेरस को हुआ था। उन्होंने 72 वर्ष की आयु में 527 ईसापूर्व, बिहार के पावापुरी से कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण प्राप्त किया। रात्रि में मंगल आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं भगवान का पालना झूला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मिठया संत प्रसाद, डॉ. महेंद्र जैन, अनिल कुमार, सुरेंद्र जैन, कमल मोदी, राजीव कुमार, देवेंद्र बसार, प्रवीन जैन, सुनील कुमार, महावीर जैन, मनोज कुमार, चंद्र कुमार, अजित जैन, संतोष जैन, राकेश कुमार, मनोज कुमार, मेघराज जैन, कपिल मोदी, अरविन्द जैन, हितेन्द्र पवैया, विकास जैन, शैलेश जैन, अजय जैन अज्जू, रीतेश कुमार, सुधीर चौधरी, सजल मोदी, प्रकाश चंद्र, महेंद्र कुमार, अशोक जैन, विजय कुमार, सुशील मोदी, प्रदीप एड, संतोष माताटीला, श्रेयांश बबीना, वीरेंद्र कुमार, राजेंद्र जैन, चक्रेश बुढ़पुरा, कमलेश जैन, सौरभ मोदी, आकाश चौधरी, आदेश मोदी, सौरभ पवैया, ऋतुराज, हर्ष जैन, अनुराग मिठया, नीलेश गरेठा, अंजेश कुमार, मनीष जैन, मिलनराज, राहिलराज, आशीष, अभिषेक, अमित, प्रिंस जैन, पियूष, शनि, सिद्धार्थ, वैभव, सहित सकल दिगम्बर जैन समाज का सक्रिय सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन चौधरी चक्रेश जैन एवं आभार व्यक्त मोदी अरुण जैन बसार ने किया। **-विशाल जैन**

भगवान महावीर के पंचशील सिद्धांत प्रासांगिक हैं : आचार्य श्री आर्जवसागर जी

भगवान महावीर के पंचशील सिद्धांत अद्भुत हैं, जो हमें जीवन जीने की कला सिखाती है : शिवराज सिंह चौहान

विदिशा (विश्व परिवार)। अहिंसा परमोधर्म को अपनाओ जिओ और जीने दो भगवान महावीर के पंचशील सिद्धांत अद्भुत है, जो हमें जीवन जीने की कला सिखाती है, अहिंसा की ही ताकत है जो आज विश्व को सुख और शांति का मार्ग दिखा रही है नहीं सताना किसी जीव को- अपने समान सभी जीवों को मानना, जैन धर्म में बहन बेटियों का जो सम्मान दिया गया है उससे मैं बहुत प्रभावित हूं सच्चे अर्थों में मैं पूर्ण जैन हूं। उपरोक्त कथन मध्यप्रदेश शासन के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर आयोजित धर्मसभा को सम्वोधित करते हुये कही। उन्होंने कहा कि जैन धर्म ही ऐसा धर्म है जिसने हमें छल कपट से रहित जीवन जीने की कला सिखाई जो अपना है उसी में संतुष्ट रहो तथा अपरिग्रह का संदेश देते हुये भगवान महावीर ने कहा कि जितनी जरूरत है उतना ही संग्रह करो मुटठी बांध कर आये हो हाथ पसारे जाओगे। विश्व यदि जैन धर्म का पालन करें तो दुनिया में सुख और शांति की राह स्थापित हो जाऐ जैन धर्म हमें व्यक्तिगत जीवन में भी सुख और शांति का मार्ग दिखाता है।

इस अवसर पर आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज ने आशीर्वाद देते हुये कहा कि विश्व को दिशा बोध देने वाले विदिशा नगरी में आज भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महा महोत्सव मनाया। आज ढाई हजार वर्ष भले ही निकल गये हो लेकिन आज भी भगवान महावीर के पंचशील सिद्धांत प्रासांगिक हैं उन्होंने कहा कि राजाओं की परपाटी में सम्राट चंद्रगुप्त मोर्य जैसे शासक हुये जिनके शासनकाल में ताले तक नहीं लगते थे।उन्होंने विना नाम लिये कहा कि आपके सामने पूर्व मुख्यमंत्री बैठे हुये है, जिन्होंने आपके बड़े बाबा को सम्मान पूर्वक स्थापित कराया और आचार्य गुरूदेव श्री विद्यासागरजी महाराज के भक्त बने रहे, एवं वर्षों तक अच्छा शासनकाल चलाया आचार्य श्री ने अपनी दीक्षा महोत्सव की बात करते हुये कहा कि आज से 36 वर्ष पूर्व आज ही के दिन मुनि श्री प्रमाण सागर जी आदि आठ मुनिराजों के साथ सोनागिर जी में मेरी मुनि दीक्षा आचार्य गुरूदेव के हाथों से हुई थी उन्ही से हम ब्रहम्चारी से लेकर छुल्लक ऐलक बने एवं एक वर्ष का मौन ब्रत लेकर साधना प्रारंभ किया था उन्होंने आचार्य श्री की महान कृपा का वर्णन करते हुये अनुग्रहित भाव रखे एवं गुरु शिष्य की परंपरा को आगे बनाये रखा गुरूदेव केसभी शिष्य एक से एक बड़े गुणी शिष्य है भगवान महावीर की परंपरा आगे चलती रहे उन्होंने शिवराज सिंह और उनकी धर्मपत्नी साधना सिंह को आशीर्वाद देते हुये कहा कि धर्म से आप लोग जुड़े है और हमेशा जुड़े रहें। इस अवसर पर जैन समाज के संरक्षक एवं समाजिक कार्यों में समर्पित रहे वयोवृद्ध हृदयमोहन जैन का पूर्व मुख्यमंत्री शिवराजसिंह ने सम्मान करते हुये कहा कि वह जैन समाज के लिये ही आदर्श नही है वह मेरे लिये भी आदर्श है। इस अवसर पर आचार्य विनम्रसागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका विमलमति माताजी के साथ आठ आर्यिका माताजी भी मंचासीन रही। प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया कार्यक्रम के पूर्व प्रात: दि. जैन छोटा मंदिर किलाअंदर से भगवान की शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों से होकर माधवगंज स्थित जयप्रकाश चौराहे पर धर्मसभा संपन्न हुई यंहा पर आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज का 37 बां मुनिदीक्षा दिवस मनाया गया एवं आचार्य श्री द्वारा रचित पुस्तकों का विमोचन किया गया एवं बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया कार्यक्रम में बड़े बाबा भगवान आदिनाथ स्वामी तथा समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ मुख्य अतिथि एवं विशेष अतिथियों के साथ स्थानीय विधायक मुकेश टंडन का सम्मान किया गया, जिला जैन समाज के अध्यक्ष बसंत जैन ने सभी का स्वागत करते हुये आचार्य गुरूदेव के प्रति अनुग्रहित भाव रखे कार्यक्रम में बड़ीसंख्या में समाज के वरिष्ठ सुरेशचंद्र एडवोकेट, पंकज हृदयमोहन जैन, संजय दिवाकीर्ती, संजय सेठ, श्री निरंजन पाटनी, शेलेन्द्र चौधरी, अविनाश जैन, श्री मति सपना जैन, पार्षद श्री मति ज्योती, श्रीमती मंजरी जैन, श्री फल समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर जीवदया के लिये दयोदय गौ शाला में कयी व्यक्तिओं ने दान की घोषणा की। **-अविनाश जैन**

जिनशासन नायक भगवान महावीर के जन्मकल्याणक महोत्सव पर जियो और जीने दो का संदेश दिया गया शोभायात्रा निकली

गौरेला (विश्व परिवार)। वर्तमान जिनशासन नायक जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2623 वां जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर शोभायात्रा ने नगर भ्रमण किया। जैनमंदिर में प्रात: विशेष पूजन अभिषेक किया गया।

ढाई हजार वर्ष से अधिक हो गये जब सिद्धार्थ त्रिसला नंदन ने कठोर तप कर केवलज्ञान प्राप्त किया और हिंसा से दग्ध जगत को अनादि काल से प्रवाहमान जिनधर्म का संदेश देकर शांति सहिष्णुता और समन्वय का पथ प्रशस्त किया। भगवान महावीर ने समझाया सभी प्राणियों की आत्मा समान है।संसार में सभी को निर्भय होकर जीने का अधिकार है। जिओ और जीने दो ही वो मंत्र है जिससे संसार में अहिंसा और शांति सह अस्तित्व की राह सुगम होगी और यही एकमात्र समाधान है, संसार से विषमता दूर होगी। भगवान महावीर का येही संदेश जिनधर्मावलंबी शोभायात्रा के माध्यम से नगर नगर डगर डगर पहुंचाते हैं।

गौरेला नगर में शोभायात्रा निकाल कर नगरभ्रमण किया। अपरान्ह में जैनमंदिर से शोभायात्रा आरंभ होकर अग्रसेन चौक होते हुये नगर के हृदयस्थल गांधीचौक, संजय चौक, मंगलीबाजार, रेस्टहाउस मार्ग, स्टेशन रोड होते हुये वापस जैनमंदिर में पूर्ण हुयी। शोभायात्रा में पुरूष वर्ग स्वेत परिधान और महिलाएं पीले वस्त्र धारक किये हुये थी।भगवान महावीर का गुणगान करते हुये जियो और जीने दो, शांति, अहिंसा का संदेश प्रसारित किया। **-वेदचन्द जैन**

महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक महोत्सव में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई

भाटापारा (विश्व परिवार)। भगवान महावीर स्वामी जी का जन्म कल्याणक महोत्सव सकल जैन समाज द्वारा बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। दिगम्बर जैन समाज अध्यक्ष पीयूष जैन ने जानकारी देते हुए बताया की हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र मास के 13वें दिन महावीर स्वामी का जन्म बिहार के कुंडग्राम में हुआ था। इन्हें जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर के रूप में माना जाता है। महावीर स्वामी उन जैन 24 तीर्थंकरों में से हैं जिन्होंने तपस्या से आत्मज्ञान की प्राप्ति की थी। कहा जाता है कि तीर्थंकर वह लोग होते हैं जो इंद्रियों और भावनाओं पर पूरी तरह से विजय प्राप्त कर लेते हैं। महावीर स्वामी ने आत्मज्ञान की तलाश में 30 वर्ष की उम्र में ही अपना घर-द्वार छोड़ दिया था। उन्होंने 12 वर्ष तक कठोर तपस्या की और दीक्षा ग्रहण की। तप के पश्चात ही भगवान महावीर को कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई और वो तीर्थंकर कहलाए और सभी को जियो और जीने दो का संदेश दिया।

इस परिपेक्ष्य में सकल जैन समाज द्वारा प्रात:काल 7 बजे मंगलाष्टक व भगवान महावीर स्वामी की शांति धारा, आरती व पूजन की गई।तत्पस्चात श्री दिगम्बर जैन परवार पंचायती मंदिर से श्री जी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। जो नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए वापस श्री दिगंबर जैन परवार पंचायती मंदिर में संपन्न हुई। शोभा यात्रा का जगह जगह समाज के सभी लोगों ने भव्य स्वागत किया तथा विभिन्न प्रकार की निर्मित झांकियों एवं आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज की स्मृति मंदिर का दर्शन पाकर भक्तों ने धर्म लाभ लिया।

श्री जी की शोभायात्रा के पश्चात मूल नायक भगवान श्री 1008 महावीर स्वामी जी का महामस्तकाभिषेक का सौभाग्य श्री शोभालाल परिवार एवं श्री प्रकाश मोदी परिवार, छत्र चढ़ाने का सौभाग्य बिमला देवी कोतमा निवासी, रत्नावली, रेखा सिंघई परिवार एवम ध्वजारोहण का सौभाग्य अनुराग जैन परिवार, अभिषेक करने का सौभाग्य विद्या गुरु सेवा संघ युवा मंडल शांति धारा का सौभाग्य मनोज एवम सुनील छाबड़ा परिवार को प्राप्त हुआ।इसके पश्चात् महिला मंडल के द्वारा वात्सल्य भोज का आयोजन किया गया। शाम को महावीर स्वामी जी का अति मनमोहक पालना झूलाने एवम आरती का कार्यक्रम रखा गया। महिला मंडल के सर्व कार्यक्रम की समाज के सभी लोगों ने बहुत प्रशंसा की।तत्पश्चात् शाम को महा आरती एवं 251 दीपों से पूरे मंदिर जी को सजाकर दीपोत्सव मनाया गया और महिला मंडल, नवकार बहु मंडल, बालिका मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें समाज के सभी वर्गों ने भाग लिया और धर्म की शिक्षा प्राप्त करते हुए कार्यक्रम का आनंद लिया।

-पियूष जैन

भगवान महावीर स्वामी के 2623वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई

जतारा (विश्व परिवार)। श्रमणाचार्य श्री विमर्श सागर जी महा मुनिराज की जन्म नगरी, श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र आदिश्वर धाम जतारा में, वैज्ञानिक संत आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य परम पूज्य मुनि 108 श्री गुरु दत्त सागर जी महाराज एवं पूज्य क्षुल्लक 105 श्री दत्त सागर जी महाराज के मंगल निर्देशन में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर प्रात: कालीन वेला में भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

भगवान महावीर स्वामी के 2623 वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र आदिश्वर धाम जतारा जी से श्री जी को पालकी में विराजमान करके शोभा यात्रा प्रारंभ हुई जो स्टेट बैंक, मुख्य बाजार, बस स्टैंड से होते हुए नीचे की सड़क से पुन: आदिश्वर धाम जतारा पहुंची। द्वार- द्वार पर श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य मुनि श्री के पाद प्रक्षालन एवं महावीर भगवान की मंगल आरती संपन्न की गई।

भारतीय जैन संगठन तहसील अध्यक्ष अशोक कुमार जैन ने बताया कि नगर परिक्रमा उपरांत श्री जी की शोभायात्रा श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर आदिश्वर धाम जतारा पहुंची, मंदिर जी में भगवान महावीर स्वामी का सामूहिक रूप से अभिषेक, शांति धारा उपरांत पूज्य 108 मुनि श्री गुरु दत्त सागर जी महाराज के मंगल प्रवचन संपन्न हुए। समस्त श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर स्वामी के मूल सिद्धांतों सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचोर्य, और ब्रह्मचर्य को याद करते हुए अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया।भगवान की पालकी उठाने का सौभाग्य पवन मोदी, अशोक जैन, हनी जैन एवं संतोष सक्षम जैन को प्राप्त हुआ।कार्यक्रम में महेंद्र टानगा, प्रकाश रोशन, सुनील बंसल, मिक्की कोठादार, खेमचंद गंज, मोनू माते, मुकेश जैन बडे, मेहू जैन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन जतारा जैन समाज उपाध्यक्ष अशोक कुमार जैन द्वारा किया गया।

मन से वाणी से शरीर से अहिंसा का पालन करने पर महावीर जयंती मनाना सार्थक होगी : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

बांसवाड़ा (विश्व परिवार)। सकल जैन समाज और पुलक चेतना मंच के संयोजन में महावीर स्वामी का 2550 वी जन्म जयंती श्रद्धा विश्वास भक्ति उत्साह पूर्वक पंचम पट्टाधीश दिगंबर जैन आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के सानिध्य में मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा में धर्म देशना में आचार्य श्री ने बताया कि श्री आदिनाथ भगवान से लेकर श्री महावीर स्वामी 24 तीर्थंकरों सहित अनेक भव्य आत्माओं ने तप, संयम से शाश्वत सुख मोक्ष को प्राप्त किया है। महावीर जयंती भी जैन समाज को उत्साह पूर्वक श्रद्धा भक्ति से मनाना चाहिए महावीर स्वामी ने अपने प्रवचन, उपदेश और आचरण से आदर्श प्रस्तुत किया है इसके पालन से आपका जीवन धन्य हो सकता है।

यह प्रवचन वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने प्रस्तुत कर आगे बताया कि अहिंसा परमो धर्म का नारा लगाने से अहिंसा की बात नहीं होती है किसी प्राणी का धात करने के साथ बल्कि मन वचन और काय शरीर से भी हिंसा होती है। इस पर अंकुश जरूरी है प्राणी एक इंद्रीय से पांच इंद्रीय तक होते हैं और चारों गति के प्राणी इसमें शामिल है इसलिए मन को अहिंसक बनाना जरूरी है, वाणी भी आपकी अहिंसक होना चाहिए।वाणी ऐसी होना चाहिए जिससे किसी का दिल नहीं दुखी हो आचार्य श्री ने भौतिक साधनों इंटरनेट मोबाइल टी वी का संकेत करते हुए बताया कि उनके उपयोग पर सावधानी जरूरी है इससे भी हिंसा अधिक हो सकती है। वर्तमान स्थिति में पुत्र पति-पत्नी भाई एक दूसरे का हिंसा करते हैं हिंसा का तांडव नृत्य दुखद है भगवान ने अहिंसा का संदेश दिया है इसलिए चार कषाय क्रोध, मान, माया और लोभ पर रोक होना चाहिए अहिंसा शब्द व्यापक है अहिंसा परमो धर्म की सार्थकता इसी में है कि आप जीवन को अहिंसा मय बनाने का प्रयास करें।तीर्थंकर भगवान, जिनवाणी, संतो और महापुरुषों ने अहिंसा का संदेश दिया है आचार्य श्री ने एक संस्मरण बताया कि वर्ष 2018 श्री बाहुबली भगवान के महा मस्तकाभिषेक में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हमारे दर्शन कर आशीर्वाद, हमने जैन साहित्य भेंट कर एक डायरी में आशीर्वचन में यही लिखा कि विश्व के प्रति मैत्री भाव रखें।मैत्री के संदेश से भारत की प्रगति हो रही है और भारत विश्व गुरु बनने की और अग्रसर है। महावीर जयंती पर अहिंसा का संदेश के साथ संयम, तप, क्षमा रखने से जीवन में उन्नति होती है और अन्य प्राणियों का भी भला होता है स्वयं की उन्नति से देश की उन्नति होती है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में, परिवार में, समाज, नगर में अहिंसा स्थापित करने का प्रयास कर जीवन को सार्थक करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। आचार्य श्री के प्रवचन के पूर्व मुनि श्री हितेंद्र सागर जी ने प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवती आचार्य श्री शांति सागर जी का आचार्य पद शताब्दी महोत्सव आगामी 13 से 15 अक्टूबर 2024 से राजस्थान के पारसोला नगर से आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के निर्देशन में प्रारंभ होने वाले अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम से अवगत करा कर कार्यक्रम देश में मनाने की प्रेरणा दी। **-राजेश पंचोलिया**

भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर स्वामी का 2623वां जन्म कल्याणक महामहोत्सव, हुए विविध आयोजन

श्री महावीरजी (विश्व परिवार)। दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में रविवार को अहिंसा धर्म के प्रणेता विश्व वंदनीय 24 वे तीर्थंकर श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी का 2623 वां जन्म कल्याणक महामहोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 6:00 बजे मंदिर कटला प्रांगण से स्थानीय विद्यालय के छात्रों द्वारा प्रभात फेरी जुलूस बैंड बाजों के साथ निकाला गया। प्रात: 7:30 बजे मंदिर कटला प्रांगण में मुनि श्री 108 चिन्मयानंद जी महाराज के सानिध्य में मुख्य अतिथि मुंबई, कोलकाता, जयपुर निवासी तरुण जैन, अनुराग जैन, काला रिखब पाटनी, मदनलाल पाटनी परिवार द्वारा झंडा रोहण किया गया। ध्वजारोहण से पूर्व दिगंबर जैन कार्यकारिणी कमेटी के मंत्री सुभाष चन्द जैन, उपाध्यक्ष चंद्र प्रकाश पहाड़ियां ने मुख्य अतिथि का माला पहनाकर तिलक लगा कर स्वागत किया। मानद् मंत्री सुभाष चन्द जैन ने मंदिर कमेटी ट्रस्ट की ओर से क्षेत्र के विकास कार्यों की जानकारी दी। तत्पश्चात कटला प्रांगण से 8:00 बजे बैंड बाजे व गाजे बाजे के साथ जल यात्रा निकाली गई जिसमें आगे आगे केसरिया ध्वज लहराते हुए छात्र चल रहे थे। श्रीजी की पालकी के साथ जुलूस निकाला गया। श्रीजी की पालकी ले जाते हुए मानद् मंत्री सुभाष चन्द जैन, उपाध्यक्ष चंद्र प्रकाश पहाड़ियां एवं श्री वीर सेवक मंडल जयपुर भगवान महावीर स्वामी के जयकारे लगाते हुए त्रिशला नंदन वीर की जय बोलो महावीर की...अहिंसा धर्म की जय... महावीर का नारा है जिन शासन हमारा है...महावीर का क्या संदेश जियो और जीने... सादा जीवन उच्च विचार महावीर की जय जयकार... नारे लगाते हुए श्रद्धालु गण चल रहे थे महावीर भगवान के जयकारों से सारा वातावरण धर्ममय हो गया। जुलूस मुख्य बाजार व कांच के मंदिर से होते हुए बगीची में पहुंचा, जहां पर पंडित मुकेश जैन शास्त्री द्वारा श्री जी के 21 रजत कलशो की बोली लगाई गई। बगीची से जुलूस बैंड बाजे के साथ जिसमें महिलाएं सिर पर मंगल कलश रखकर चल रही थी जुलूस मुख्य मंदिर गया। 10:30 बजे कटला पश्चिमी पंडाल में स्थानीय स्कूल के विद्यार्थियों को मोदक वितरण, अस्पताल में मरीजों को, हिंडोन स्थित जेल के कैदियों को फल वितरण किया गया। मध्यान 12:00 बजे कटला पश्चिमी पंडाल मे श्री वीर संगीत मंडल जयपुर द्वारा भक्ति संध्या सामूहिक पूजन की गई। दोपहर 2:00 बजे भगवान महावीर स्वामी का पालना झुलाया गया, मेरे महावीर झूले पलना...सन्मति वीर झूले पलना...जिसमें सैकड़ो श्रद्धालुओं ने वीर प्रभु का पालना झुलाया। दोपहर 3:30 बजे कलशाभिषेक किये गए।

4 बजे प्रदर्शनी प्रांगण में मुख्य अतिथि एसडीम हेमराज गुर्जर, तहसीलदार द्वारा महावीर स्वामी के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलित कर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। 4:30 बजे दिव्यागो को ट्राई साइकिल कृत्रिम पैर बैसाखी, केलिपर्स तथा असमर्थ एवं विधवा महिलाओं को हाथ की सिलाई मशीन वितरण की गयी। इस अवसर पर श्री दिगंबर जैन कार्यकारिणी कमेटी के मानद् मंत्री सुभाषचंद जैन, उपाध्यक्ष चंद्रप्रकाश पहाड़िया, संयुक्त मंत्री उमरावमल संघी, सदस्य अनिल पाटनी दीवान, मैनेजर नेमीचंद पाटनी, प्रवीण कुमार जैन, विशेषाधिकारी विकास पाटनी, चंदन वाला महिला मंडल आदि उपस्थित रहे। **-विनोद जैन कोटखावदा**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर सोमवार 22 अप्रैल 2024

संक्षिप्त समाचार

व्यय प्रेक्षक दबास ने औराई चेक पोस्ट का किया निरीक्षण

महासमुन्द(विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत व्यय प्रेक्षक द्वारा लगातार चेक पोस्ट का निरीक्षण किया जा रहा है। महासमुंद लोकसभा क्रमांक 09 के महासमुंद, खल्लारी, बसना एवं सरायपाली के व्यय प्रेक्षक मनीष कुमार दबास द्वारा आज अंतर जिला महासमुंद बलौदाबाजार जिले की सीमा के एस.एस .टी. औराई चेकपोस्ट का निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने उक्त स्थान में जांच की गई वाहनों की जानकारी, पंजियों के संधारण इत्यादि का अवलोकन भी किया और 24 घंटे सतर्कता के साथ कड़ी निगरानी रखे जाने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश सम्बन्धित अधिकारी को दिए । निरीक्षण के दौरान अब्दुल वहीद खान लाइजनिंग अधिकारी एवं उप वनमण्डलाधिकारी मौजूद थे।

कलेक्टर की पहल: राजस्व कार्यों में तेजी लाने अमला को दिया गया प्रशिक्षण

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। राजस्व मामलों में कमी और राजस्व कार्यों में तेजी लाने के मद्देनजर कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू ने जिले के सभी राजस्व अधिकारियों कर्मचारियों में बुनियादी प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस करते हुए डिप्टी कलेक्टर वर्षा बंसल के नेतृत्व में प्रशिक्षण कराने के निर्देश दिए हैं। डिप्टी कलेक्टर वर्षा बंसल के नेतृत्व में विगत दिनों राजस्व निरीक्षकों को सीमांकन, बटांकन आदि का कार्यालय और खेत में जाकर प्रशिक्षण दिया गया। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू के द्वारा सभी बैठको में राजस्व संबंधी कार्यों के लिए प्रक्रिया को अधिकारी कर्मचारी जानते हैं कि नहीं। इसके लिए प्रक्रिया के बारे में जानकारी साझा करने कहते हैं। कलेक्टर श्री साहू का मंशा है कि जितना हमारा राजस्व अमला कार्य को जानेंगे समझेंगे, राजस्व मामलों में उतनी ही कमी आयेगी।

घर बैठे 85 प्लस बुजुर्गों और दिव्यांगों ने किया अपने मतदाधिकार का प्रयोग

धमतरी(विश्व परिवार)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 85+ बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाताओं को मतदान केन्द्रों तक पहुंचकर मतदान में आने वाली दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए घर पर ही मतदान की सुविधा प्रदान की है, इस सुविधा के मिल जाने से 85 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्ग और दिव्यांगजन काफी खुश हैं। उन्होंने निर्वाचन आयोग और मतदान दल के अधिकारी, कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। जिले की तीनों विधानसभाओं में निवासरत् बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाताओं ने अपना गोपनीय मत मतपेटी में डाला। साथ ही आगामी 26 अप्रैल को होने वाले चुनाव में शत-प्रतिशत मतदान करने की अपील भी की गई। गौरतलब है कि कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री नम्रता गांधी के निर्देशानुसार लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत महासमुंद लोकसभा क्षेत्र के विधानसभा धमतरी और कुरूद तथा लोकसभा क्षेत्र कांकेर के विधानसभा सिहावा में आज और 20 अप्रैल को मतदान दल के अधिकारी, कर्मचारियों के जरिए बुजुर्ग एवं दिव्यांग मतदाताओं से उनके घर-घर दस्तक देकर मतदान कराया जा रहा है।

स्कूल बस की ठोकर से बाइक सवार की मौत, पंचायत सचिव ने दर्ज करायी शिकायत

बसना(विश्व परिवार)। बसना क्षेत्रान्तर्गत बीती रात ग्राम सराईपाली-बरोली रोड़ के पास स्कूल बस की ठोकर से बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे इलाज के लिए रायपुर ले जाया जा रहा था।इसी दौरान उसने रास्ते में दम तोड़ दिया। पुलिस ने आरोपी बस चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। ग्राम कंचनपुर निवासी सीताराम पटेल ने पुलिस को बताया कि, वह ग्राम जेराभरन में पंचायत सचिव के पद पर कार्यरत है। 18 अप्रैल को रात करीब 9 बजे उसका भतीजा राम प्रसाद पटेल अपने मोटर सायकल हीरो होण्डा डिलक्स क्र में कंचनपुर सांकरा से ग्राम पिपलीपाली ईट रचने अपने अन्य साथी रामनाथ पटेल, खेमलाल पटेल व डिग्रीलाल पटेल के साथ अलग-अलग बाइक से डिग्रीलाल पटेल के साथ अलग-अलग बाइक से गंतव्य तक जाने के लिये निकले थे। इसी दौरान रात करीब 09:40 बजे ग्राम सराईपाली-बरोली रोड़ के पास बरोली तरफ से आ रही पीले रंग की स्कूल बस ने लापरवाही पूर्वक चलाते हुए राम प्रसाद पटेल के बाइक को सामने से जबरदस्त ठोकर मार दी। हादसे में रामप्रसाद बुरी तरह से घायल हो गया । तत्पश्चात रामप्रसाद पटेल को एम्बुलेंस के माध्यम से ईलाज हेतु शासकीय अस्पताल बसना ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने चेक कर उचित ईलाज हेतु रायपुर रिफर करने पर राम प्रसाद को रायपुर ले जाया जा रहा था। रायपुर के लिए निकला एम्बुलेन्स साल्हेतराई के पास पहुँचा था कि, उसने साल्हेतरई बाँध के पास दम तोड़ दिया।

देश और समाज को दिये आदिवासियों के योगदान को केवल भाजपा ने पहचाना - देवेन्द्र प्रताप सिंह

आदिवासी समाज का समर्थन व सहयोग भाजपा के साथ-एम. डी. ठाकुर

राजनांदगाँव(विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी संतोष पांडे के पक्ष में आदिवासी बहुल क्षेत्रों में धुंआधार प्रचार करने आज सुप्रसिद्ध आदिवासी नेता व राज्यसभा सांसद राजा देवेन्द्र प्रताप सिंह का आगमन हुआ हैं और उन्होंने जिले की पाँच विधानसभा क्षेत्रों में एक दर्जन से भी अधिक सभाओं में आदिवासी समाज को जागृत करते हुए कहा कि हम बूढ़ादेव को मानने वाले लोग भारतीय संस्कृति की अविभाज्य अंग हैं, सांस्कृतिक समाज से हमें अलग दिखाने का षड्यन्त्र बहुतेरे लोगों द्वारा किया जा रहा हैं, ये लोग आदिवासियों को भड़काने उन्हे समाज से अलग दिखाने की कोशिश कर रहें हैं, किन्तु ऐसे लोग कभी सफल नहीं होंगे। हम भारतीय समाज के अभिन्न अंग हैं और भविष्य में भी रहेंगे, और

विरोध करने वाले लोग मुंह के बल गिरेंगे।भाजपा मीडिया सेल द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार जनजातिय गौरव समाज के प्रदेश अध्यक्ष एम.डी. ठाकुर के साथ हुए अपने प्रवास में उन्होंने आगे कहा कि आजादी के बाद आदिवासी समाज के गौरव की प्रतिष्ठा किसी ने की, तो वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं, उन्होंने मुझ जैसे एक छोटे से कार्यकर्ता को राज्यसभा जैसे उच्च सदन में भेजने की अनुकंपा की, छत्तीसगढ़ प्रदेश में हमारी बरसों-बरस मांग की प्रदेश में आदिवासियों मुख्यमंत्री को भी उन्होंने पूरा कर दिखाया और तो और देश के सर्वोच्च पद पर आदिवासी महिला को प्रतिनिधित्व दिया जिससे देश का सम्पूर्ण आदिवासी समाज अपने आपको गौरान्वित महसूस कर रहा है। इस दौरान अनेक स्थानों पर आदिवासी समाज को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जल, जंगल, व जमीन में समाज के प्राकृतिक अधिकार सदैव भाजपा के नेतृत्व में सुरक्षित रहने वाले हैं उन्हे उनके अधिकारों से कोई भी जुदा नहीं कर सकता।

कामकाज या अन्य कारणों से दूसरे शहर गये मतदाताओं को वीडियो कॉल कर लोकतंत्र के महापर्व में शामिल होने किया जा रहा प्रोत्साहित

महासमुंद(विश्व परिवार)। जिले में मतदान प्रतिशत बढ़ाने और मतदान में लोगों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन द्वारा जिले से पलायन किए मतदाताओं को वीडियो कॉल कर लोकतंत्र के महापर्व में शामिल होने प्रोत्साहित किया जा रहा है। गौरतलब है कि कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रभात मलिक के निर्देशानुसार और स्वीप के नोडल अधिकारी एस. आलोक के मार्गदर्शन में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में पंचायत विभाग के बीएलओ, सचिवों एवं रोजगार सहायकों के द्वारा जिले से पलायन किये मतदाताओं से वीडियो कॉल के जरिए बातचीत की जा रही है और उन्हें शतप्रतिशत मतदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। स्वीप के सहायक नोडल अधिकारी रेखराज शर्मा ने बताया कि जिले के महासमुंद, बसना, बागबाहरा, पिथौरा एवं सरायपाली विकासखंड के बीएलओ, सचिव, रोजगार सहायक एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा विभिन्न ग्रामों में घर-घर पहुंचकर मतदाताओं को लोकसभा निर्वाचन में मतदान करने के लिए विभिन्न माध्यमों से प्रेरित किया जा रहा है। इसके साथ ही ऐसे मतदाता जो पलायन किए हैं या विभिन्न कारणों से बाहर हैं, उन्हें वीडियो कॉल के जरिए लोकतंत्र के महापर्व में सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है। इसके साथ ही मतदान का महत्व बताते हुए महासमुंद लोकसभा निर्वाचन में 26 अप्रैल को मतदान करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

मतदान दलों की हुई सकुशल वापसी ईव्हीएम स्ट्रांग रूम में हुए जमा

बीजापुर(विश्व परिवार)। स्तर लोकसभा संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र 89 बीजापुर अजजा के तहत मतदान केन्द्रों मे से अति संवेदनशील क्षेत्र के मतदान केन्द्रो के लिए लोकसभा निर्वाचन हेतु मतदान दिवस के 3 दिन पहले मतदान दलों को हेलीकॉप्टर रवाना किया गया था] जिनकी वापसी दो दिनों तक 19 एवं आज 20 अप्रैल को हो गई है। स्ट्रांग रूम के बाहर निर्वाचन अधिकारियों द्वारा मतदान दलों से निर्वाचन संबंधी जानकारी ली गई। जिले में 245 मतदान केन्द्र बनाया गया था, जिसमें 10 संगवारी मतदान केंद्र] 05 युवा] 01 दिव्यांग और 05 आदर्श मतदान केंद्र केंद्र बनाया गया है। जिले में कुल मतदाताओं की संख्या 1 लाख 70 हजार 449 है। जिसमें से पुरूष मतदाता 81 हजार 981 और महिला मतदाता 88 हजार 460 हैं तथा अन्य 08 मतदाता हैं। जिले में 43-42 प्रतिशत मतदान हुआ है। विधानसभा क्षेत्र बीजापुर से हैलिकॉप्टर से मतदान दलों की सकुशल वापसी हुई है। इसके पश्चात मतदान दलों के सभी सदस्यों द्वारा सांस्कृतिक भवन पहुंच कर ईव्हीएम मशीनों को जमा करने के पश्चात कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के मार्गदर्शन में तथा राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति स्ट्रांग रूम में जमा कर स्ट्रांग रूम को सील किया गया। कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी अनुराग पाण्डेय ने शांतिपूर्ण मतदान संपन्न कराने के लिए मतदान दलों को बधाई दी।

पाटन अस्पताल में देखने मिला टीम वर्क, डॉक्टर आशीष शर्मा के नेतृत्व में 5 हाई रिस्क गर्भवती माताओं का सिजेरियन सफल ऑपरेशन

पाटन(विश्व परिवार)। शनिवार किन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाटन में 5 हाई रिस्क गर्भवती माताओं का सिजेरियन ऑपरेशन सुरक्षित प्रसव करवाया गया। डॉ कृष्ण कुमार डहेरिया स्त्री एवं प्रसूति रोग सर्जन ने बताया कि 5 गर्भवति माताओं को गंभीर प्रकृति के हाई रिस्क थे। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ जे पी मेश्राम एवं जिला नोडल अधिकारी (मातृ स्वास्थ्य) डॉ अर्चना चौहान के मार्गदर्शन में बीएमओ पाटन के नेतृत्व में फील्ड से हाई रिस्क गर्भवती माताओं की ट्रैकिंग कर सुरक्षित मातृत्व आश्वासन के तहत कार्य किया जा रहा है। विभिन्न उपस्वास्थ्य केंद्रों के ग्रामीण स्वास्थ्य संयोजकों, सुपरवाइजर, मितानिनो से सक्रिय सहयोग से हाई रिस्क गर्भवती माताओं का चिन्हांकन कर विशेषज्ञों के परामर्श से क्रियान्वयन किया जा रहा है। ओपरशन में एनेस्थेसिया विशेषज्ञ डॉ अंकिता बोधनकर, प्रदीप सिन्हा, हेमलता वर्मा, अनिता जोशी, रूपा सिन्हा, जितेंद्र निर्मलकर, गिरिवर ,गीतांजलि साहू, माधुरी , लक्ष्मी , शीतल,हमर लैब टीम सरस्वती वर्मा, रमेश, एवं ब्लड स्टोरेज टीम श्वेता भारद्वाज, सुनीता वर्मा, फर्मेसी पोषण यादव, सिंधुराज आदि स्टाफ के संयुक्त सहयोग से कार्य संपादित किया गया।

सड़क पर लगे संकेतक को एंगल सहित उड़ा ले गए चोर, ग्रमीणों में आक्रोश, सोरम से बेलौदी सड़क का है मामला

पाटन(विश्व परिवार)। वाहन चालकों व पैदल यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा के लिए जगह-जगह लगाए गए संकेतक बोर्ड व लोहे कीं एंगल पर चोरों की टेढ़ी नजर है। संकेतक बोर्ड व लोहे की ग्रिल एंगल को अज्ञात चोरों द्वारा चोरी किया जा रहा है। सोरम से धूमा होकर बेलौदी तक सड़क के संकेतक गायब हो गए हैं। पाटन ब्लॉक में पीडब्ल्यूडी द्वारा बनाई गई सड़क के संकेतकों पर चोरों की नजर है।ग्राम सोरम धूमा होकर बेलौदी तक लगभग 5 किमी में कई जगह संकेतक बोर्ड लगे हुए थे। संकेतक बोर्ड नहीं

होने के कारण वाहन चालकों का ध्यान सिर्फ वाहन की गति या सामने होता है। आगे वाहन की गति को कम करना है, मोड़, दुर्घटना जन्य इसका उन्हें पता नहीं होता है। जिससे दुर्घटनाएं होने की सम्भवना बनी रहती है। सड़क में मोड़ को दर्शाने के लिए लगाए गए संकेतक को धीरे धीरे चोरी किया जा रहा है,सबसे पहले लोहे की एंगल में लगे बोर्ड को निकाला जाता है ,चूंकि एंगल में बोर्ड सिर्फ कुछ ही नट और बोल्ट से लगे होते हैं इसलिए सिर्फ नट को खोलकर बोर्ड पहले निकाल लेते हैं। दूसरे स्टेप में कुछ दिनों बाद लोहे की एंगल को धीरे धीरे मोड़ कर टेढ़ा कर दिया जाता है। और अंत मे पूरा तोड़ दिया जाता है। उक्त सड़क पर बिना बोर्ड के एंगल,मोड़े गए एंगल और पूरा उखाड़े गए एंगल की जगह स्पष्ट दिखाई पड़ रही है। विगत वर्षों पाटन नवागांव से होकर बेलौदी तक सड़क बनाई गई थी, इस सड़क में सोरम से लेकर बेलौदी तक आवागमन थोड़ा कम ही होता है ,,इस कारण चोरों ने इस सुनसान सड़क को अपना निशाना बनाया है।

शतप्रतिशत मतदान के लिए महिला बाल विकास विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों द्वारा निकाली गई विशाल स्कूटी-बाइक रैली

मुंगेली(विश्व परिवार)। स्वीप कार्यक्रम के तहत आज जिला कलेक्टोरेट परिसर से महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों द्वारा विशाल स्कूटी-बाइक रैली निकाली गई। रैली में सीडीपीओ, सुपरवाइजर, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका सहित सैंकड़ों की संख्या में लोग शामिल हुए। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी राहुल देव ने रैली में शामिल सभी अधिकारी-कर्मचारियों में शतप्रतिशत मतदान के लिए जोश और उत्साह भरते हुए शपथ दिलाई। महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह स्कूटी-बाइक रैली

''शतप्रतिशत मतदान, मुंगेली जिले का अभिमान'' लोकतंत्र में हिस्सेदारी, हर नागरिक की जिम्मेदारी, देश के विकास में दो अपना योगदान, हर हाल में करो मतदान नारे के साथ जिला कलेक्टोरेट परिसर से शुरू होकर दाऊपारा, पुराना बस स्टैंड, बालानी चौक, पड़ाव चौक होते हुए नया बस स्टैंड पहुंची। जिसके बाद बायपास सड़क से रेस्ट हाउस, दाऊपारा मार्ग होते हुए वापस जिला कलेक्टोरेट पहुंची।कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि बड़ी संख्या में आप लोग यहां इकट्ठा हुए है। यह आपके कार्य के प्रति कर्मठता और जुझारूपन को दिखाता है। कलेक्टर ने कहा कि स्वीप के तहत लगातार जिले में नित नए आयोजन हो रहे है। इसका मुख्य उद्देश्य शतप्रतिशत मतदाताओ को अपने मताधिकार के प्रयोग के लिए जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि 07 मई को आखिरी परीक्षा होगी, जिसमे सभी मतदाताओं की शतप्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी।

भूपेश बघेल के पक्ष में कांग्रेस के चुनाव प्रचार में आई तेजी

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। आगामी लोकसभा चुनाव में राजनांदगांव लोकसभा सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार छतीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के पक्ष में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं द्वारा लगातार नुक्कड़ सभा के साथ-साथ डोर-टू-डोर चुनाव प्रचार भी किया जा रहा है। इसी कड़ी में क्षितिज चंद्राकर एवं प्रमोद दुबे के निर्देशानुसार मयूरी सिंह, नित्य शरण सिंह, कुबेर वर्मा सहित अन्य कांग्रेसियों ने अलग-अलग ग्रामों में घर-घर जाकर कांग्रेस की नीतियों व घोषणा पत्र का प्रचार करते हुए प्रत्याशी भुपेश बघेल के पक्ष में वोट करने की अपील की। इस दौरान उनके साथ दानी जंघेल, मनभावन, छबिलाल, जयप्रकाश, नीलकंठ, भागोली सहित अन्य कांग्रेस कार्यकर्ता गण भी थे।

व्यापार समाचार

विदेशी मुद्रा भंडार में 5 .4 अरब डॉलर की बड़ी गिरावट

मुंबई (एजेंसी)। विदेशी मुद्रा एसेट्स में भारी गिरावट के कारण देश के विदेशी मुद्रा भंडार में तीन महीने से ज्यादा की सबसे बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 12 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 5.401 अरब डॉलर घटकर 643.162 अरब डॉलर रह गया। यह इस साल 5 जनवरी के बाद यानी 14 सप्ताह की सबसे बड़ी गिरावट है। इससे पहले 5 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में लगातार सातवें सप्ताह बढ़ता हुआ विदेशी मुद्रा भंडार 648.562 अरब डॉलर रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया था। सात सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 32.465 अरब डॉलर बढ़ा था। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बढ़ते भू-राजनैतिक संघर्ष और तनावों के बीच दूसरे केंद्रीय बैंकों की तरह आरबीआई भी अपना स्वर्ण भंडार बढ़ा रहा है। आंकड़ों के अनुसार, 12 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में देश का सोने का भंडार 1.241 अरब डॉलर बढ़कर 55.798 अरब डॉलर हो गया जो इसका अब तक का उच्चतम स्तर है। विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि से आरबीआई को रुपये के अस्थिर होने पर उसे स्थिर करने के लिए अधिक गुंजाइश मिलती है। वह रुपये को भारी गिरावट से बचाने के लिए अधिक डॉलर जारी कर हाजिर और वायदा मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप करता है। इसके विपरीत, विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट से आरबीआई के पास रुपये को सहारा देने के लिए बाजार में हस्तक्षेप करने का कम विकल्प बचता है।

कलर्स दे रहा है भक्तों को लक्ष्मी और नारायण का अनोखा दर्शन

मुंबई। चैत्र मास के पावन महीने में, कलर्स पूरे भारत के भक्तों को लक्ष्मी और नारायण के दिव्य जोड़े का आशीर्वाद पाने का अनूठा मौका दे रहा है। जैसा कि यह एचजीईसी 22 अप्रैल को रात 10 बजे अपनी महाकृति 'लक्ष्मी नारायण - सुख सामर्थ्य संतुलन' का प्रीमियर करने के लिए तैयार है, इसने एक अनोखे आध्यात्मिक अनुभव का अनावरण किया है जो पारंपरिक पूजा-अर्चना की सीमाओं से परे है। लाखों लोगों का दिल जीतने के लिए तैयार, कलर्स ने अयोध्या और दिल्ली में मनोरम 4डी इंटरैक्टिव मंदिर बनाए हैं। ये आकर्षक गर्भगृह भक्तों को लक्ष्मी नारायण की दिव्य उपस्थिति का अभूतपूर्व ढंग से आनंद लेने की सहूलियत देते हैं। चैनल सभी को इस मंदिर में आमंत्रित करता है ताकि उन्हें ऐसे लोक में ले जाया जा सके जहां देवता जीवित हो उठते हैं, जिससे ऐसा अनूठा मंच तैयार होगा जहां भक्त उनकी आभा को महसूस कर सकते हैं। हालांकि, यह आध्यात्मिक सफर यहीं समाप्त नहीं होता है। कलर्स ने एक अत्याधुनिक डिजिटल मंदिर भी लॉन्च किया है, जो भक्त अपने घर में बैठकर ही लक्ष्मी और नारायण का आशीर्वाद पा सकते हैं। अपनी स्क्रीन पर बस कुछ टैप करके, भक्त आध्यात्मिक ज्ञान के वर्चुअल तीर्थ में कदम रख सकते हैं। चाहे कोई 4डी मंदिरों के दर्शन करना चाहे या डिजिटल मंदिर का भ्रमण करना चाहे, वे लक्ष्मी और नारायण की महिमा देख सकते हैं और उनसे प्रार्थना करके अपने मन की बात कर सकते हैं।

एलन मस्क का भारत दौरा स्थगित

नई दिल्ली(एजेंसी)। एलन मस्क ने शनिवार को पुष्टि की कि टेस्ला के महत्वपूर्ण तिमाही नतीजों के बीच वह इस महीने भारत का दौरा नहीं कर पाएंगे। हो सकता है इस साल के अंत में वो भारत आएं। एक्स पर एक पोस्ट में, अरबपति ने कहा, टेस्ला को लेकर कई दायित्वों के कारण भारत की यात्रा में देरी होगी। मस्क ने कहा, लेकिन मैं इस साल के अंत में आने के लिए बहुत उत्सुक हूं। पिछले हफ्ते, अरबपति ने ट्वीट किया था कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलना चाहते हैं। स्पेसएक्स के सीईओ अपनी भारत यात्रा के दौरान भारतीय अंतरिक्ष कंपनियों के प्रतिनिधियों से भी मिलने वाले थे। मस्क ने हाल ही में टेस्ला की तिमाही नतीजों पर विश्लेषकों के साथ एक महत्वपूर्ण कॉन्फ्रेंस कॉल की थी, जिसके बाद कंपनी ने वैश्विक स्तर पर अपने कार्यबल में 10 प्रतिशत या लगभग 14,000 कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया। टेस्ला में छंटनी से कुछ विभागों के 20 प्रतिशत तक कर्मचारी बर्खास्त कर दिए गए। यह निर्णय मुख्य रूप से खराब वित्तीय प्रदर्शन के कारण था। टेस्ला के दो हाई-प्रोफाइल अधिकारी - रोहन पटेल और ड्रू बैगलिनो ने भी कंपनी छोड़ दी है। टेस्ला ने लगभग 25,000 डॉलर में कम लागत वाली ईवी विकसित करने की योजना भी फिलहाल स्थगित कर दी है।

अदाणी पोर्ट्स ने अधिग्रहण के बाद कैसे देश के बंदरगाहों की विकास क्षमता का किया इस्तेमाल

नई दिल्ली(एजेंसी)। देश के सबसे बड़े निजी पोर्ट ऑपरेटर अदाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन (एपीएसईजेड) ने इस महीने की शुरुआत में घोषणा की थी कि उसने (अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाहों सहित) वित्त वर्ष 2023-24 में 42 करोड़ टन कार्गो हैंडल किया जो कंपनी की यात्रा में एक नया मील का पत्थर है। वर्ष दर वर्ष आधार पर यह 24 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि है, जिसमें घरेलू बंदरगाहों ने 40.8 करोड़ टन से ज्यादा का योगदान दिया। कंपनी को पहली बार 10 करोड़ टन वार्षिक कार्गो थ्रूपुट हासिल करने में 14 साल लगे। वहीं, 20 करोड़ टन का आंकड़ा हासिल करने में अगले पांच साल तथा 30 करोड़ टन तक पहुंचने में तीन साल और लगे। विशेष रूप से, नवीनतम 10 करोड़ टन का आंकड़ा दो साल से भी कम समय में हासिल किया गया है। एपीएसईजेड पिछले कुछ वर्षों में एकीकृत बंदरगाह इंफ्रास्ट्रक्चर सेवाओं के प्रदाता के रूप में उभरा है, जिसमें से गुजरात का मुंद्रा एसईजेड एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। आठ हजार हेक्टेयर से अधिक में फैला मुंद्रा इकोनॉमिक हब सबसे बड़े बहु-उत्पाद एसईजेड, मुक्त व्यापार एवं वेयरहाउसिंग क्षेत्र (एफटीडब्ल्यूजेड) और घरेलू औद्योगिक क्षेत्र के रूप में निवेश के विकल्प प्रदान करता है। एपीएसईजेड के पहले बंदरगाह मुंद्रा पर 1998 में पहला जहाज आया था। तब से, कंपनी ने देश के पूर्वी और पश्चिमी तटों पर 15 बंदरगाहों और टर्मिनलों का एक नेटवर्क बनाया है।

राहुल की कप्तानी पारी, लखनऊ ने सीएसके को आठ विकेट से हराया

लखनऊ(एजेंसी)। कप्तान केएल राहुल (82) और क्विंटन डी कॉक (54) के बीच पहले विकेट के लिए शतकीय साझेदारी के दम पर यहां एकाना क्रिकेट स्टेडियम में इंडियन प्रीमियर लीग के 34वें मैच में लखनऊ सुपर जाइंट्स ने चेन्नई सुपर किंग्स पर एक ओवर शेष रहते आठ विकेट से आसान जीत दर्ज की। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए चेन्नई ने रवीन्द्र जडेजा के नाबाद अर्धशतक के बाद एमएस धोनी की नौ गेंदों में 28 रन की तेज पारी की बदौलत 20 ओवर में छह विकेट पर 176 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया था। जवाब में लखनऊ ने 19 ओवर में दो विकेट पर 180 रन बनाकर मैच जीत लिया। डी कॉक और राहुल ने पहले विकेट के लिए 15 ओवर में 134 रन जोड़कर चेन्नई की सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। डी कॉक को मुस्तफिजुर रहमान की गेंद पर एमएस धोनी ने विकेट के पीछे कैच किया। यह 15वें ओवर की आखिरी गेंद थी। 18वें ओवर की पहली गेंद पर जब राहुल मथिशा पतिराना की गेंद पर कैच आउट हुए तब तक टीम का स्कोर 161 रन पर पहुंच चुका था। निकोलस पूरन (12 गेंद पर नाबाद 23) और मार्कस स्टॉयनिस (नाबाद आठ) ने टीम को आराम से लक्ष्य के पार पहुंचा दिया। इस जीत के साथ लखनऊ प्वाइंट्स टेबल में पांचवें स्थान पर पहुंच गई। सात मैचों में यह उसकी चौथी जीत है। केकेआर, सीएसके और एसआरएच के साथ अब उसके भी आठ अंक हैं। इससे पहले, चेन्नई की शुरुआत खराब रही। मीडिया छोर से मैच का दूसरा ओवर फेंक रहे मोहसिन खान ने पहली ही गेंद पर रचिन रवींद्र (0) को बोल्ड कर दिया। सीएसके ने दो ओवर में 7/1 के बाद गति पकड़नी शुरू ही की थी कि राहुल ने गेंदबाजी में बदलाव किया और मैट हेनरी की जगह यश ठाकुर को गेंद थमा दी। ठाकुर ने अपनी दूसरी ही गेंद पर सीएसके के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ को 17 रन पर आउट कर दिया। लखनऊ को सरप्राइज देते हुए नंबर 4 पर जडेजा (57 नाबाद) बैंटिंग करने के लिए आए। जैसे ही पावर-प्ले समाप्त हुआ क्रुणाल पंड्या गेंदबाजी करने आए। उन्होंने नवें ओवर की पहली गेंद पर अजिंक्य रहाणे (36 रन) को बोल्ड कर सीएसके को एक और झटका दिया। फॉर्म में चल रहे शिवम दुबे नंबर 5 पर आए, लेकिन कुछ खास नहीं कर पाये। वह आठ गेंद पर तीन रन बनाकर स्टॉयनिस का शिकार बने। एक छोर पर जडेजा टिके रहे जबकि दूसरे छोर पर लगातर विकेट गिरते रहे। समीर रिजवी 13वें ओवर में एक रन बनाकर आउट हुए। मोईन अली (30) 18वें ओवर की पांचवीं गेंद पर जब आउट हुए उस समय टीम का स्कोर 141 रन था। इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरे धोनी ने लखनऊ के गेंदबाजों की जमकर धुलाई की। उन्होंने नौ गेंद में दो छक्कों और तीन चौकों की मदद से नाबाद 28 रन बनाये और टीम का स्कोर 176 पर पहुंचाया।

एयर इंडिया का बड़ा फैसला, 30 अप्रैल तक तेल अवीव के लिए फ्लाइट्स पर बैन

नई दिल्ली(एजेंसी) । इजरायल और ईरान के बीच मौजूदा संघर्ष और तनाव के मद्देनजर एयर इंडिया ने इजरायल की राजधानी तेल अवीव के लिए अपनी उड़ान सेवाओं का निलंबन 30 अप्रैल तक बढ़ा दिया। एयरलाइन ने एक बयान में कहा, मध्य पूर्व में उभरती स्थिति को देखते हुए तेल अवीव से हमारी उड़ानें 30 अप्रैल 2024 तक निलंबित रहेंगी।

टाटा द्वारा संचालित एयरलाइन ने अपनी उड़ानों को पुनर्निर्धारित करने वाले यात्रियों के लिए एकमुश्त छूट की भी पेशकश की है। एयरलाइन ने कहा, हम लगातार स्थिति की निगरानी कर रहे हैं और अपने उन यात्रियों को समर्थन दे रहे हैं, जिन्होंने इस अवधि के दौरान तेल अवीव से यात्रा के लिए बुकिंग की है, साथ ही पुनर्निर्धारण और रद्दीकरण शुल्क पर एक बार की छूट भी दी है। वर्तमान में एयर इंडिया दिल्ली और तेल अवीव के बीच चार साप्ताहिक उड़ानें चलाती है। कहा जा रहा है कि एयर इंडिया के अलावा कई अन्य एयरलाइन कंपनियां मध्य-पूर्व में बढ़ते तनाव के खतरे को देखते हुए इस तरह के कदम पर विचार कर रही हैं।

एमएस धोनी की फिटनेस और तूफानी बल्लेबाजी देख क्रिकेट जगत हैरान

मुंबइ(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर और सनराइजर्स हैदराबाद के कोच टॉम मूडी, पूर्व भारतीय खिलाड़ी जहीर खान, वसीम जाफर और रॉबिन उथप्पा ने सीएसके के पूर्व कप्तान एमएस धोनी की एक और शानदार पारी और उनकी फिटनेस की सराहना की है। लखनऊ के खिलाफ एमएस धोनी ने 9 गेंदों में नाबाद 28 रन बनाकर सीएसके को 20 ओवरों में 176/6 के सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। रवींद्र जडेजा द्वारा नाबाद 57 रन बनाकर सीएसके को मैच में बनाए रखने के बाद धोनी ने टीम को एक अच्छा फिनिश दिया। हालांकि, केएल राहुल (82) और क्विंटन डी कॉक (54) की 134 रन की ओपनिंग पार्टनरशिप की मदद से लखनऊ ने चेन्नई को आठ विकेट से हरा दिया। बेशक सीएसके को इस मैच में हार मिली लेकिन टीम के फैंस धोनी की बल्लेबाजी और उनकी फिटनेस देखकर बेहद खुश हैं। मूडी ने कहा कि धोनी 42 साल की उम्र में भी बहुत फिट, बहुत फोकस्ड और रन के भूखे हैं। वो आईपीएल 2024 से पहले क्रिकेट से दूर थे, लेकिन उनके प्रदर्शन को देखकर ऐसा लगता नहीं है। ईएसपीएनक्रिकइन्फो ने मूडी के हवाले से कहा, 42 साल के धोनी अभी भी बहुत फिट, फोकस्ड हैं, लेकिन पहेली यह है कि वह आईपीएल में आने से पहले कोई क्रिकेट नहीं खेलते हैं। ऐसे में उच्च स्तर पर प्रदर्शन करने में सक्षम होने की उम्मीद करना लगभग असंभव है। सीएसके के पहले दो मैचों में बल्लेबाजी करने का मौका नहीं मिलने के बाद, धोनी ने 31 मार्च को विशाखापत्तनम में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 16 गेंदों में नाबाद 38 रन बनाए। पिछले हफ्ते, भारत के पूर्व कप्तान ने मुंबई के खिलाफ अंतिम ओवर में छक्कों की हैट्रिक जमाई। वानखेड़े स्टेडियम में धोनी ने 4 गेंदों में नाबाद 20 रन की धमाकेदार पारी खेली।

जनवरी-मार्च तिमाही में विप्रो का मुनाफा आठ फीसदी घटकर 2,835 करोड़ रुपये रहा

बेंगलुरु(एजेंसी)। वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में आईटी सॉफ्टवेयर क्षेत्र की दिग्गज कंपनी विप्रो का शुद्ध मुनाफा 7.80 प्रतिशत घटकर 2,834.6 करोड़ रुपये रह गया। इससे पहले वित्त वर्ष 2022-23 की समान तिमाही में कंपनी को 3,074.5 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि गत 31 मार्च को समाप्त तिमाही में कंपनी का राजस्व 4.18 प्रतिशत गिरकर 22,208.3 करोड़ रुपये हो गया। बेंगलुरु स्थित कंपनी ने एक साल पहले इसी तिमाही में 23,190.3 करोड़ रुपये का समेकित राजस्व दर्ज किया था। कंपनी का आईटी सेवा क्षेत्र का राजस्व 265.74 करोड़ डॉलर रहा, जो क्रमिक रूप से 0.1 प्रतिशत की वृद्धि और एक साल पहले की तुलना में 6.4 प्रतिशत की कमी है। शुक्रवार को जारी आंकड़ों से पता चलता है कि स्वैच्छिक नौकरी छोड़ने की दर 14.2 प्रतिशत थी। चौथी तिमाही में कंपनी के कर्मचारियों की संख्या में 6,180 और पूरे साल के दौरान 24,516 की कमी आई। कंपनी ने अनुमान लगाया है कि 30 जून को समाप्त होने वाली तिमाही में स्थिर मुद्रा के संदर्भ में 1.5 प्रतिशत की से 0.5 प्रतिशत की बढ़त तक हो सकती है। विप्रो के सीईओ श्रीनि पल्लिया ने कहा कि 2023-24 आईटी उद्योग के लिए एक चुनौतीपूर्ण वर्ष साबित हुआ और व्यापक आर्थिक माहौल अनिश्चित बना हुआ है, हालांकि, मैं आगे आने वाले अवसरों को लेकर आशावादी हूं। पल्लिया ने कहा कि कंपनी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ अपने ग्राहकों की जरूरतों को बदलने के साथ एक प्रमुख तकनीकी बदलाव की राह पर है क्योंकि वे प्रतिस्पर्धी लाभ और उन्नत व्यावसायिक मूल्य के लिए इसकी शक्ति का उपयोग करना चाहते हैं। पल्लिया ने कहा, हमारे पास हमारे लक्ष्यों को साकार करने में मदद करने के लिए दुनिया भर में 2,30,000 से अधिक विप्रोइट्स की क्षमताएं, नेतृत्व और ताकत है। हालांकि हमें काफी काम करना है, मुझे विश्वास है कि अपने सामूहिक प्रयास के साथ मिलकर हम विकास के अगले अध्याय का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

आईपीएल के बीच धोनी के शहर रांची पहुंचे सचिन तेंदुलकर

रांची(एजेंसी)। भारत में आईपीएल 2024 की धूम मची हुई है। इस बीच क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर और उनकी पत्नी अंजलि तेंदुलकर शनिवार सुबह रांची पहुंचे, जहां उनका जोरदार स्वागत हुआ। बिरसा मुंडा एयरपोर्ट रांची पर मौजूद फैंस क्रिकेट के भगवान की एक झलक पाने को बेताब दिखे। सचिन यहां ओरमांझी में युवा फाउंडेशन की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम के लिए आए हैं। सचिन ने कहा, मैं यहां अपने फाउंडेशन के लिए आया हूं। सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन यहां के यूथ फाउंडेशन के साथ मिलकर काम करता है। खासकर मैं यहां की महिला खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाने आया हूं। इसलिए मैं युवा लड़कियों को देखने आया हूं जो फुटबॉल खेलती हैं और उन्हें प्रोत्साहित करूंगा। इस समय इसके अलावा यहां आने की कोई और वजह नहीं है। बता दें कि सचिन तेंदुलकर के रांची पहुंचने का वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। इस वीडियो में फैंस का उनके प्रति उत्साह साफ नजर आ रहा है। वहीं एयरपोर्ट पर रांची डीसी राहुल कुमार सिन्हा उनके स्वागत के लिए पहुंचे और कड़ी सुरक्षा के साथ सचिन को उनके होटल ले जाया गया।

जनसेवा संस्कार उत्सव समिति एवं नारी विकास समूह के तत्वावधान में कन्यादान संस्कार उत्सव

रायपुर (विश्व परिवार)। जनसेवा संस्कार उत्सव समिति एवं नारी विकास समूह के तत्वावधान में लगातार विगत सात वर्षों से बेटियों की कन्यादान संस्कार उत्सव का कार्यक्रम रखा जाता है जिसमें अब तक 63 बेटियों का कन्यादान किया जा चुका है, इस वर्ष भी 13 बेटीयों का कन्यादान19 अप्रेल 2024 को सम्पन्न हुआ, इस कार्यक्रम में बेटियों को आशीर्वाद देने के लिए सम्माननीय विधायक मोतीलाल साहू, सुभाष तिवारी व बिरगांव नगर निगम के महापौर नंदलाल देवांगन, बिरगांव नगर निगम के पार्षद गण शामिल होकर बेटियों को आशीर्वाद दिए, समिति के द्वारा ऐसी बेटियों का विवाह करने के लिए चयन किया जाता है जिनके माता पिता नहीं हैं या उनका परिवार शादी करा पाने में सक्षम नहीं हैं ऐसी बेटियों का विवाह किया गया। इस भव्य और नेक कार्य करने का बीड़ा उठाया जन सेवा संस्कार उत्सव समिति एवं नारी विकास समुह के अध्यक्ष श्रीमती पदमा विनोद चंद्राकर (पूर्व सदस्य महिला आयोग छत्तीसगढ़ शासन) एवं उनकी समिति के सदस्यों ने, सभी के अथक प्रयास से यह शुभ कार्य का सफ्लता पूर्वक आयोजन किया गया, इस कार्यक्रम को सफ्ल बनाने दैवतुल्य सभी सहयोगी सदस्य गण का विशेष योगदान रहा है जिसके कारण यह कन्यादान संस्कार समारोह का का आयोजन बहुत ही सुंदर तरीके से और हिंदू रीति रिवाज से गाजे बाजे के साथ नगर भ्रमण करते हुए भारी भीड़ की मात्रा में विवाह स्थल तक पहुंचे और जहां समिति के बहनों के द्वारा सभी बारातियों का अद्भुत स्वागत किया गया, विवाह हिंदू रीति रिवाज से संपन्न हुआ। पदमा विनोद चंद्राकर ने सभी देवतुल्य सभी सहयोगियों का ह्रदय कोटि कोटि धन्यवाद दिया और कहा कि इन बेटियों का घर बसाने आप सभी का विशेष योगदान रहा हैं। इस कार्यक्रम को सफ्ल बनाने अपना अमूल्य समय देने वाले मेरे सभी सहयोगी गण राकेश साहु जी, तरूण वर्मा जी शुभम् अग्रवाल जी, भूवन वर्मा जी, महेश्वरी जी, अमित जी अजय अग्रवाल जी, सत्यभांवा आडिल जी पूनम कक्कड़ जी व सदस्य गण श्रीमती रेखा साहु, माया पाठक, ईश्वरी परगनिहा, दुलारी चंद्राकर, तिरिथ साहु, भूवनेश्वरी चन्द्राकर संतोषी वर्मा,उर्मिला लहरी हेमलता वर्मा, सुमित्रा सारथी , तुलसी पटले,राकेश राजगढ़िया, मुकेश पटले,किशन विश्वकर्मा, कृष्णा साहु,जुगल वर्मा जय देवांगन, मोन्टू निर्मलकर टीकाराम साहु, , मालिक राम साहू मोनू एवं समस्त सहयोगी व सदस्य गण को मैं धन्यवाद देती हूँ, इस दौरान जनसेवा संस्कार उत्सव समिति एवं नारी विकास समूह के द्वारा प्रत्येक जोड़े को गृहस्थ जीवन से जुडी सामग्रियां भी प्रदान की गईं।

दैनिक
विश्व परिवार महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, सोमवार 22 अप्रैल 2024

23 की रात प्रधानमंत्री रायपुर में करेंगे रात्रि विश्राम!

रायपुर (आरएनएस)। भाजपा सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार छत्तीसगढ़ प्रवास पर आ रहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रायपुर में रात्रि विश्राम कर सकते हैं। हालांकि इसकी अधिकृत रूप से पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन प्रशासन ने तैयारी शुरू कर दी है। पुलिस ने शनिवार रात पीएम की सुरक्षा को लेकर मॉकड्रिल भी किया है। बताया जाता है कि संभवतः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रात में राजभवन में विश्राम कर सकते हैं।

महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव की भव्य शोभायात्रा में उमड़ा जैन सैलाब

महावीर का संदेश 'जियो और जीने दो' के उद्घोष के साथ निकाली गई महावीर जन्म कल्याणक शोभायात्रा ● 2623 दीपो से भगवान महावीर की आरती की गई

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव 2024 समिति द्वारा सकल जैन समाज एक साथ मिलकर 24 वे तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म महोत्सव बड़े धूम धाम से धार्मिक वातावरण में श्रद्धा के साथ मनाता है। इस वर्ष मनाए जा रहे भगवान महावीर के 2623 वे जन्म महोत्सव पर विभिन्न आयोजन आयोजित कर सभी जैन धर्म के अनुयायी जैन एकता का परिचय देते है महोत्सव समिति के अध्यक्ष जितेंद्र गोलछा एवं प्रणीत जैन मीडिया प्रभारी ने बताया की समिति द्वारा 15 दिवसीय सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन में सभी समाजजन, महिला मंडल एवं समितियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। राजधानी रायपुर में महावीर जयंती पूरे भारत वर्ष में बढ़ चढ़ कर मानने के कारण काफी प्रसिद्ध है। सुबह प्रात: 6:30 बजे से प्रभात फेरी सामाजिक एकता परिचायक बन समाज को एक सूत्र में बांधने का प्रयास पिछले कई वर्षो से कर रही है। इस आयोजन में श्री साधु मार्गी समता युवा संघ का विशेष सहयोग प्रतिवर्ष प्राप्त होता रहा है। विभिन्न मंडलों द्वारा

दिगंबर जैन समाज ने भगवान महावीर का अभिषेक, शांति धारा के बाद किया आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का पूजन

जीवदया का बहुत ही सुंदर प्रयास कर महावीर का संदेश जियो और जीने दो को सार्थक करते है।महावीर प्रसादी भंडारे के माध्यम से इस वर्ष लगभग 30, 000 लोगो को शुद्ध भोजन करवाया गया है। जरूरतमंदों को कपड़ा, स्टेशनरी, कॉपी, आदि सामग्री का वितरण महिला मंडल द्वारा प्रतिदिन किया गया। रक्त दान शिविर के माध्यम से लगभग 500 लोगो ने रक्तदान कर सेवा कार्य किया।चिकित्सा जांच में कई बड़े चिकित्सकों ने शिविर लगा कर लोगो को स्वस्थ की प्रति जागरूक किया। एवं बीमार लोगो का नि:शुल्क इलाह भी किया।महिला मंडल द्वारा लगभग 150 कार्यक्रम 15 दिनों में किए गए। जिसमे समाज के सभी वर्ग के लोगो ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। दिनांक 21 अप्रैल को जन्म कल्याणक महोत्सव के दिन सभी सकल जैन समाज के सदस्य एक साथ शोभा यात्रा निकलेंगे। यह शोभा यात्रा सुबह 9.00 बजे श्री आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर मालवीय रोड से शुरू होकर सदर बाजार, सत्तीबाजार, तात्यापारा, बढ़ईपारा, रामसागर पारा, राठौड़ चौक, से गुरुनानक चौक होते हुए वापस एवं जी रोड स्थित जैन दादा बाड़ी में समाप्त हुई। पूरे दिनभर विभिन्न आयोजन में सम्पूर्ण स्वास्थ्य जांच शिविर जैन दादा बाड़ी में हो रहे है। सभी समाज जन जैन दादा बाड़ी पहुंच कर अपनी अपनी पूजा पद्धति से भगवान महावीर का जन्म कल्याणक पूजन कर महावीर जयंती मना रहे है।

दिगंबर जैन समाज ने आज सकल जैन समाज की शोभायात्रा में शामिल होकर भगवान महावीर को रथ में विराज मान कर शोभा यात्रा के माध्यम से नगर भ्रमण करवाया। समाज के अध्यक्ष संजय जैन नायक ने बताया की शोभा यात्रा समाप्ति के बाद सभी जैन दादा बाड़ी में एकत्रित होकर भगवान महावीर को पांडुकशीला में विराज मान कर के प्रासूक जल से भगवान का अभिषेक, शांति धारा किया। आज भगवान को प्रथम चार इंद्रो ने अभिषेक करने वाले मनोज कुमार, महेंद्र कुमार जैन, हिमांशु अभिषेक थे।आज की वृहद शांति धारा करने का सौभाग्य आशीष सपना जैन चिरमिरी वालो को प्राप्त हुआ। आरती करने का सौभाग्य बंशी लाला भारत कुमार परिवार को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात उपस्थित धर्म प्रेमी बंधुओ ने प.पु.आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का भी याद किया कर पूजन किया।अंत में विसर्जन पाठ किया गया।इस पूरे 15 दिवसीय आयोजन में प्लास्टिक एक पौलिथन का उपयोग न कर रायपुर सकल जैन समाज ने एक मिसाल प्रस्तुत को है।

श्वेतांबर जैन समाज द्वारा भी ऋषभ देव जैन मंदिर सदर बाजार से रजत रथ में भगवान को विराज मान कर नगर भ्रमण करवाया गया अंत में जैन दादा बाड़ी में भगवान महावीर के जन्म कल्याणक पर पंच कल्याणक पूजा कर भगवान की आरती की गई। जिसमे बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

शाम 7 बजे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जायेंगे जिसमें प्रभु महावीर सेवा सम्मान समारोह का आयोजन भी किया गया है। इस आयोजन में रात्रि 8 बजे छत्तीसगढ़ प्रदेश में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भी शामिल होंगे। श्रीमद रामचंद्र आत्म तत्व रिसर्च सेंटर द्वारा रात्रि 9 बजे भगवान महावीर के जन्म के पूर्व जो 14 स्वप्न आए थे। उसी पर आधारित आज के परिपेक्ष में 14 स्वप्नों की प्रस्तुति का आयोजन किया गया है। रात्रि 11.26 को भगवान महावीर की 2623 दीपो की आरती उपस्थित सभी धर्म प्रेमी बंधुओ द्वारा की जाएगी।

इस वर्ष शोभा यात्रा में प्लास्टिक डिस्पोजल आदि पूर्णत: प्रतिबाधित थे।सकल जैन समाज द्वारा पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए शोभायात्रा में प्लास्टिक/ डिस्पोजन खाने पीने की किसी भी प्रकार की सामग्री प्रतिबंधित थी। केवल शुद्ध जल तांबे के लोटे स्टील को ग्लास या कागज के डिस्पोजल में वितरण किया गया।

इसी क्रम में शोभायात्रा मे महामंत्र ग्रुप पारुल जैन, हिना जैन आदि के प्रयास से वृद्व, विकलांग व चलने में असमर्थ लोगों की जुलुस में शामिल होने की भावनाओं का सम्मान करते हुए 15 ई रिक्शा लगवाए गए थे। सुधर्म नवयुवक मंडल द्वारा जल संरक्षण को लेकर विशेष प्रयास कर लगभग 25000 लीटर पानी की बचत की गई।संस्था द्वारा भोजन की झूठी प्लेटो को लकड़ी के बुरादे से साफ किया।इस कार्य में राजस्थान से आए कारीगरों एवं समाजजन के विशेष सहयोग से जूठी प्लेट साफ कर पानी बचाया गया।

जैन आदर्श ग्लोबल ओर्गनिजेशन द्वारा जीवदया को और विशेष प्रयास किया गया।पिछले 10 वर्षो से संस्था द्वारा हर वर्ष महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर पशु पक्षियों के लिए पीने के पानी के लिए मिट्टी के सकोरे एवं दाना बाटा जाता है।इस वर्ष संस्था द्वारा 2500 सकोरो का नि:शुल्क वितरण किया गया।

महावीर प्रसादी भंडारे का आयोजन महावीर जन्म कल्याणक के दिन 2 अलग अलग स्थानों में किया गया था। जिसमे लगभग 3000 लोगो को भोजन करवाया गया। आज रक्तदान शिविर में लगभग 210 लोगो ने अपना रक्त दान किया।

-प्रणीत जैन

रायपुर लोकसभा के भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल का जनसंपर्क जोर-शोर से जारी

विभिन्न कालोनियों में जनसंपर्क किया और लोगों से समर्थन मांगा

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर लोकसभा के भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल का जनसंपर्क जोर शोर से चल रहा है। इसी तारतम्य में रविवार को उन्होंने शहर को विभिन्न कालोनियों में जनसंपर्क किया और लोगों से समर्थन मांगा। उनके जनसंपर्क शुरूआत मोवा से हुई यहां से अशोक रतन, सिंधु भवन, बीटीआई ग्राउंड, शंकर नगर, वीआइपी क्लब, वीआईपी कॉलोनी, शंकर नगर, मारूति सॉलिटेयर, कचना रोड, शक्ति नगर उड़िया बस्ती, त्रिमुर्ति नगर फाफाडीह में समाप्त हुई।

इस अवसर पर जगह-जगह जनसभाओं का भी आयोजन किया गया था। इन सभाओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार सुशासन और सुरक्षा पर विश्वास करती है। छत्तीसगढ़ में 4 महीने में ही वातावरण बदल चुका है पहले कांग्रेस कार्यकाल में रायपुर की जनता भय और अशांति के माहौल में जीती थी। राजधानी में अपराधियों का बोलबाला था। लूट हत्या, डकैती आम हो गया था। छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार आने के बाद अब शांति का माहौल है। केंद्र में कांग्रेस सरकार होने पर ऐसा ही कुछ पूरे देश भर का माहौल था लेकिन यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आने के बाद से पिछले 10 सालों में देश में आतंकवाद और दूसरे अपराधों में कमी आई है। जब राज्य या देश में शांति होती है तभी वह प्रगति करता है जिसका उदाहरण साफ है। आज दुनिया के दूसरे देशों में अर्थव्यवस्था चरमरा गई है। लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार आगे बढ़ रही है बहुत जल्द भारत विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हो जाएगा। इसके लिए हमको एक बार फिर से रायपुर समेत पूरे देश में भाजपा को जितना है और नरेंद्र मोदी जी को पुन: प्रधानमंत्री बनाना है।

इस अवसर पर बृजमोहन अग्रवाल ने कम मतदान पर भी चिंता जताते हुए लोगों से देश हित में मतदान करने और दूसरों को भी मतदान के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया।

आप सभी से निवेदन करूंगा कि केवल आप मुझे ही वोट ना दें बल्कि अपने दोस्तों यारों रिश्तेदारों जो कहीं भी रहता है उनको भी भाजपा को वोट देने के लिए प्रेरित करें आपका एक-एक वोट बहुत कीमती है।

भाजपा ने महिलाओं को दिया सम्मान : भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने महिलाओं को सम्मान दिलाने के लिए जो काम किया है वह काम पिछले 50 सालों में भी कांग्रेस सरकार नहीं कर पाई। आज महिलाओं के लिए 33 फ़ीसदी आरक्षण के साथ ही उन्हें 1000 रुपए हर महीने मिल रहे है। महिलाओं को धुएं और उससे होने वाली बीमारियों से आजादी दिलाने के लिए मोदी जी ने उज्वला योजना के तहत फ्री में गैस कनेक्शन दिए हैं।देश का कोई भी व्यक्ति भूखे पेट ना रहे इसके लिए मुफ्त में 35 किलो राशन हर महीने दिया जा रहा है। पिछले 10 सालों में 25 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी रेखा के ऊपर आए हैं यह मोदी जी और केंद्र सरकार की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

आज के कार्यक्रम में सांसद सुनील सोनी, विधायक पुरंदर मिश्रा, कवि पद्मश्री सुरेंद्र दुबे, जयंती भाई पटेल, छगन मुंदड़ा, रोहित साहू, स्थानीय पार्षद और हजारों की संख्या में भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने मतदान प्रतिशत बढ़ाने तथा मतदान केन्द्रों में आवश्यक व्यवस्था के संबंध में बैठक ली

राजनांदगांव (विसं)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री संजय अग्रवाल ने आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में लोकसभा निर्वाचन 2024 के दृष्टिगत मतदान का प्रतिशत बढ़ाने तथा मतदान दिवस में मतदान केन्द्रों में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के संबंध में अधिकारियों की बैठक ली। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि मतदान केन्द्रों में पेयजल, छांव, रैम्प, प्रकाश, फर्नीचर सहित अन्य बुनियादी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गर्मी को ध्यान में रखते हुए मतदान केन्द्रों में विशेष तौर पर व्यवस्था करने की जरूरत है, इसके लिए प्रसास करें। मतदान केन्द्र में छांव की व्यवस्था के लिए स्थानीय स्तर पर टेंट के साथ ही पत्तियों से बने इकोफ्रेंडली मंडप बनवाएं। मतदान केन्द्रों में साफ-सफाई की व्यवस्था होनी चाहिए। सभी आवश्यक व्यवस्था के लिए अधिकारी पहले से ही मानिटरिंग करें और सभी तैयारी रखें। कलेक्टर ने कहा कि शिशुवती माताओं, दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिकों को लंबी कतार में खड़ा नहीं होना पड़े, इसके लिए उनके लिए अलग से ग्रीन कॉरिडोर बनाएं। दिव्यांग एवं बुजुर्ग मतदाताओं के लिए मतदान केन्द्रों में रैम्प होना चाहिए तथा व्हील चेयर की व्यवस्था होनी चाहिए। दिव्यांगजन एवं बुजुर्गों की मदद के लिए एनसीसी, स्काउट गाईड, एनआरएलएम की महिलाएं मतदान केन्द्र में उपस्थित रहें।

कलेक्टर ने मतदान दलों के लिए वाहन की व्यवस्था के संबंध में जानकारी ली तथा मतदान केन्द्र पहुंच मार्ग के संबंध में सभी को अवगत होने के लिए कहा। स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आवश्यक दवाइयों का किट भी उपलब्ध होना चाहिए। उन्होंने मतदान दलों के भोजन के संबंध में व्यवस्था करने के निर्देश दिए। मतदान दलों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए कहा। जिन ग्रामों में दिव्यांगजन है, वहां दिव्यांग रथ होना चाहिए तथा ई-रिक्शा की व्यवस्था होनी चाहिए।

राज्य कर विभाग ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में जीएसटी कलेक्शन 20 हजार करोड़ रुपए पार कर लिया

रायपुर (आरएनएस)। राज्य कर विभाग ने पिछले वित्तीय वर्ष 2023-24 में 20,000 करोड़ टैक्स कलेक्शन के माइल स्टोन को पार कर लिया। विभाग ने कुल 20,361 करोड़ रुपए जीएसटी और वैट जमा कराया। पिछले वर्ष की तुलना मे जीएसटी में 22 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई जो राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है। प्रवर्तन शाखा द्वारा केवल अंतिम तीन महीनो में 45 व्यवसायियों की जांच से 32 करोड़ रुपए जमा कराये, 14 बोगस फर्मों का भंडाफोड़ किया और ई वे बिल जांच से 8 करोड़ 61 लाख की टैक्स और पेनल्टी जमा कराई गई। स्टेट जीएसटी विभाग द्वारा कर चोरी रोकने के लिए एडवांस आई टी टूल्स का उपयोग किया जा रहा है। विभाग द्वारा करदाताओं की सुविधा के लिए और राज्य में जीएसटी से जुड़ी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नस (श्वह्रष्ठक्च) सेल का भी गठन किया गया है। इसी तारतम्य में जीएसटी की टोल फ्री हेल्पलाइन भी शुरू की गई है। राज्य कर आयुक्त द्वारा चेम्बर ऑफ कॉमर्स, टैक्स बार एसोसिएशन, चार्टर्ड अकाउंटेंट तथा अन्य सभी व्यावसायिक संगठनो और छोटे व्यापारियों से लगातार संवाद हेतु एक आउटरिच कार्यक्रम भी घोषित किया है, जिसके अंतर्गत राज्य कर आयुक्त खुद महीने में तीन बार इन संगठनों के साथ बैठक करेंगे साथ ही वृत्त और जिला स्तर पर भी संयुक्त आयुक्त स्तर के अधिकारी व्यापारियों से मिल कर उनकी समस्याओं को जानेंगे और उन्हे दूर करने का प्रयास करेंगे।

विभाग, कर प्रशासन को साफ और पारदर्शी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य कर आयुक्त द्वारा सभी अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि वे नियमों के अनुरूप और राजस्व हित मे ही कार्य करें।

कार्य मे लापरवाही और अनियमितता की शिकायत पर आयुक्त द्वारा महासमुंद के राज्य कर अधिकारी श्री नन्द कुमार कुर्रे को निलंबित कर दिया गया है। चुनाव में मतदाताओं को प्रभावित करने हेतु बांटे जाने वाले वस्तुओं के परिवहन की जांच के लिए ओड़ीशा राज्य की अंतरराज्यीय सीमा पर अवस्थित चेक पोस्ट पर ड्यूटि के दौरान श्री कुर्रे द्वारा अनियमितता किए जाने की शिकायत मिली थी जिसे गंभीरता से लेते हुये प्रारम्भिक जांच पश्चात आयुक्त ने उन्हे निलंबित किया है। निलंबन के दौरान उनका मुख्यालय संभाग एक रायपुर होगा।

राज्य कर आयुक्त द्वारा संयुक्त आयुक्त राज्य कर रायपुर संभाग एक एवं दो की दिनांक 18 एवं 19 अप्रैल को ली गई समीक्षा बैठक में संयुक्त आयुक्तों को भी निर्देशित किया गया कि वें भी अपने अधीनस्थ अधिकारियों पर प्रशासनिक नियंत्रण रखें और कार्य में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों पर कार्यवाही करें। संयुक्त आयुक्त राज्य कर रायपुर संभाग एक द्वारा दो राज्य कर निरीक्षकों सुश्री दीपा उधवानी तथा श्री विमल खांडेकर को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया है। इसी प्रकार रायपुर संभाग दो के संयुक्त आयुक्त द्वारा अपने अधीनस्थ 5 अधिकारियों श्रीमति श्वेता चंद्राकार, सहायक आयुक्त श्री प्रभाकर उपाध्याय राज्य कर अधिकारी, श्री राकेश अरोरा, राज्य कर अधिकारी, सुश्री प्रीति बघेल और श्री मुकेश कश्यप सहायक ग्रेड-3 को कारण कार्य में लापरवाही बरतने पर कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया है।

निधन सूचना एवं उठावना कार्यक्रम

रायपुर (विश्व परिवार)। अत्यंत दुख के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्रीमती तारादेवी मालू (धर्मसहायिका श्री उत्तमचंद मालू) उम्र 83 वर्ष, 21 अप्रैल (रविवार) प्रात:काल अरिहंत शरण में विलीन हो गए हैं। विधि के विधान के आगे हम सभी नतमस्तक है।

उठावना का कार्यक्रम निम्नानुसार है- दिनाँक 22 अप्रैल सोमवार को प्रात: 9.30 बजे। स्थान- निवास स्थान, देवेंद्र नगर सी-74, सेक्टर-4 (विजय मालू के निवास) से परमतारक शीतलनाथ जिनालय, सेक्टर-2, देवेंद्र नगर।

शोकाकुल- उत्तमचन्द, गुमानचंद, मोहनलाल, अशोक कुमार, प्रकाशचंद, दिलीप कुमार, पारसमल, गौतमचंद, निर्मल, शरद, हेमन्त, डॉ. नितिन, प्रदीप, अजय, विजय, संजय, आलोक, विवेक, अभिषेक, अमित, राहुल एवं समस्त मालू परिवार (महासमुंद-रायपुर-खरियाररोड)।

3 वार्डों के ठेकेदारों पर लगा हजारों का जुर्माना

रायपुर (विसं)। निगम क्षेत्र में सफाई के निगरानी अभियान के तहत 3 वार्डों की जांच की गई। इसमें वार्डों में गन्दगी और सफाई कर्मी भी निर्धारित संख्या से कम मिले। जिस पर सफाई ठेकेदारों पर 55 हजार रुपए का जुर्माना किया गया। वार्ड 59 के संतोषी नगर क्षेत्र में नाले जाम पाए गए। वहां के गलियों में गंदगी भी पसरी हुई थी। सफाई कर्मचारियों की गिनती की गई तो 40 में से मात्र 15 कर्मी ही मौजूद थे। सफाई ठेकेदार को बुलवाकर जमकर फटकार लगाई गई। उस पर 25 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया गया। इसी तरह वार्ड 60 में 35 में से सिर्फ 15 सफाई कर्मी मौजूद मिले। 20 कर्मी गायब मिलने पर ठेकेदार पर 15 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया। वार्ड 43 में भी भारी मात्रा में गन्दगी पाई गई। वहां 40 में से मात्र 20 कर्मी ही कार्यरत मिलने पर ठेकेदार पर 15 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया। तीनों ठेकेदारों पर जुर्माने की कार्रवाई करने के साथ कार्य में लापरवाही नहीं बरतने की चेतावनी दी गई। डॉ. पाणिग्रही ने बताया कि निगम कमिश्नर श्री मिश्रा के निर्देश पर शहर के साफ - सफाई की लगातार कार्रवाई की जा रही है। कल भी कांशीराम नगर क्षेत्र में गन्दगी पाए जाने पर ठेकेदार पर 25 हजार का जुर्माना लगाया गया था।

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता
ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिटर्न | Food Licence
इन्कम TAX फाईल | M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड | प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस | डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354